नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 363, नई दिल्ली, मंगलवार 03 मार्च 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जिस इंसान के पास आशा होती है, वह कभी पराजित नहीं होता है!

03 केतु महादशा: जीवन का आध्यात्मिक रूपांतरण

06 ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियमों और कार्बन क्रेडिट के बीच नीतिगत अंतर

08 आरटीआई एक्टिविस्ट डॉ. राजकुमार यादव की भाजपा के कद्दावर नेता श्याम जाजू से भेंट

परिवहन विशेष
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र
India's First Leading English Transport Newspaper
parivahanvishesh

आरएनआई द्वारा दो भाषाओं में अनुमोदित, प्रकाशित समाचार पत्र "परिवहन विशेष" वार्षिक समारोह

दिनांक:- 29 मार्च , स्थान:- मावलंकर हाल, कांस्टीट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया, समय:- 1 बजे से 5 बजे

परिवहन विशेष : हिन्दी एवं इंग्लिश भाषा दैनिक समाचार पत्र आपको अपने तृतीय वार्षिक समारोह में सम्मान पूर्वक शामिल होने के लिए निमंत्रित करता है

इस वर्ष का वार्षिक समारोह मुख्य रूप से "सड़क सुरक्षा, प्रदूषण, साइबर अपराध और महिला सुरक्षा" को समर्पित है।

मुख्य विशेषता :

1. विशेषज्ञों द्वारा जानने का प्रयास की भारत सरकार द्वारा देश में सख्त कानून लागू करने के बाद भी बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं और सड़को पर उपलब्ध जाम का मुख्य कारण और उससे छुटकारा पाने के लिए क्या नीतियां अनिवार्य,
2. सुप्रीम कोर्ट आफ इंडिया, एनजीटी, वायु गुणवत्ता आयोग एवं सरकारों द्वारा नए नए दिशा निर्देशों, आदेशों के बाद भी प्रदूषण नियंत्रण होने के स्थान पर बढ़ता जा रहा है उससे निजात पाने के लिए जाएंगे इस समारोह में विशेषज्ञों से उनके विचार
3. डिजिटल इंडिया की तरफ बढ़ते भारत में बढ़ते साइबर क्राइम से कैसे बचा जा सकता है इसपर पूर्ण चर्चा एवम् विशेषज्ञों की राय
4. भारत दश में नए कानूनों के बावजूद महिलाओं पर अत्याचार और गुमशुदगी पर गहन चिंतन और विशेषज्ञों के विचार

इस समारोह में भारत देश के ज्वलंतशील मुद्दों पर जानकारी प्राप्त कर समाचार पत्रों द्वारा जनहित में जनता को सचेत करने और उससे जनता की सुरक्षा संभव के लिए *"परिवहन विशेष" " समर्पित एवं पूर्ण रूप से प्रयासरत रहेगा। इस उद्देश्य को मद्देनजर रखते हुए इस वर्ष का वार्षिक समारोह ज्वलंतशील मुद्दों को समर्पित किया गया है। इस समारोह में भारत देश से विशेषज्ञों के साथ - साथ हमारा प्रयास भारत सरकार के माननीय गणमान्य कैबिनेट एवं राज्य स्तरीय मंत्रियों की गरिमा पूर्ण उपस्थिति और उनके विचार जनहित में मुख्य बिंदुओं में रहेगा।

इस समारोह में भारत देश में जनहित में इन कार्यों को करने में पूर्ण निष्ठा से सलग्न "सामाजिक कार्यकर्ताओं और कार्यरत समूहों (एनजीओ, ट्रस्ट एवं एसोसिएशन) को पुरस्कार" देकर सम्मानित किया जाएगा।

आपकी उपस्थिति हमारा गर्व

TRANSPORT VISHESH NEWS LIMITED
www.newsparivahan.com, www.newstransport.in

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) - वैष्णवी फाउंडेशन एवं द्वारका स्थित मैक्स सुपर हॉस्पिटल के सौजन्य से

-"पूर्णता नि:शुल्क, कोई रजिस्ट्रेशन फीस नहीं, स्वास्थ्य जाँच शिविर
" आपकी तंदुरुस्ती हमारा ध्येय",
टोलवा ट्रस्ट द्वारा आयोजित पूर्णत: निशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर

* वैष्णवी फाउंडेशन के सहयोग द्वारा
1. आंखों की जांच, 2. रक्तचाप, 3. मधुमेह जांच,4. मोतियाबिंद सर्जरी के साथ-साथ
5. भारतीय लेंस की सुविधा
* द्वारका स्थित मैक्स सुपर हॉस्पिटल के सहयोग द्वारा
6. बीपी, 7. शुगर, 8. कोलेस्ट्रॉल, 9. हड्डियों का घनत्व,
इस जांच शिविर मे ऊपरलिखित सभी जांच पूरी तरह से नि:शुल्क प्रदान की जाएगी।
इस जांच शिविर में निम्नलिखित अनुभवी एवं विशेषज्ञ डॉक्टर्स एवम्-अन्य की निगरानी में जांच,
वैष्णवी फाउंडेशन
1. डॉ मनोज कुमार दुबे,
2. रिशु भारद्वाज, एवं
3. विकास राय द्वारका स्थित मैक्स सुपर हॉस्पिटल चिकित्सक
4. जगदीश

जांच शिविर : दिनांक: 15 मार्च (रविवार) 2026
स्थान: गुरुद्वारा सिंह सभा, शहीद भगत सिंह कॉलोनी, शिवाजी एन्क्लेव, दिल्ली ।।0027।
समय: 10:00 AM to 02:00 PM

आप सभी से विनम्र निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में समय पर पधारें तथा अपने सगे-संबंधियों और मित्रों को भी साथ लेकर आएँ और इस अवसर का लाभ उठाएँ।

विशेष जानकारी मोतियाबिंद सर्जरी के साथ-साथ भारतीय लेंस की सुविधा के लिए मरीज को अपने खर्चे पर * बालाजी हॉस्पिटल * लायन्स हॉस्पिटल पहुंचना पड़ेगा, पर सर्जरी और भारतीय लेंस निशुल्क रहेगा।

स्वस्थ रहें, जागरूक रहें। आपकी सेहत – हमारी प्राथमिकता।

निवेदक :-
संजय कुमार बाठला, राष्ट्रीय अध्यक्ष
पिंकी कुंडू, महासचिव
केके छाबड़ा उपाध्यक्ष
सुनीता शर्मा सचिव
अभिषेक राजपूत सचिव

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार: "स्पैम DND से परे? ब्लॉक करें, रिपोर्ट करें, एस्केलेट करें।"

पिंकी कुंडू

* पृष्ठभूमि

- TRAI का DND ऐप केवल भारतीय नंबरों से आने वाली स्पैम कॉल और SMS की रिपोर्टिंग की सुविधा देता है।

- लेकिन OTT प्लेटफ़ॉर्म (WhatsApp, Telegram, Signal) या अंतरराष्ट्रीय नंबरों से आने वाले संचार TRAI के नियमन के दायरे से बाहर हैं।

OTT प्लेटफ़ॉर्म पर स्पैम रिपोर्ट कैसे करें

- चैट खोलें → संपर्क/ग्रुप नाम पर टैप करें → नीचे स्क्रॉल करें → Report चुनें।

- प्रोफ़ाइल खोलें → Report → प्लेटफ़ॉर्म की मॉडरेशन टीम को रिपोर्ट भेजें।

- हर OTT ऐप में रिपोर्टिंग का विकल्प अलग हो सकता है।

अंतरराष्ट्रीय नंबर (कॉल/SMS)

- TRAI का अधिकार क्षेत्र केवल भारतीय ऑपरेटरों तक सीमित है।

- अंतरराष्ट्रीय स्पैम TRAI DND ऐप के दायरे में नहीं आता।

- सुझाए गए कदम:

- अपने डिवाइस पर नंबर ब्लॉक करें।

- यदि OTT ऐप पर प्राप्त हुआ है तो प्लेटफ़ॉर्म पर रिपोर्ट करें।

चक्षु (संचार साथी का हिस्सा) की भूमिका इस दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण है ।

जब नागरिक OTT प्लेटफ़ॉर्म या अंतरराष्ट्रीय नंबरों से प्राप्त धोखाधड़ी संचार की रिपोर्ट करते हैं:

1. नागरिक द्वारा रिपोर्टिंग

- संदिग्ध संदेश/कॉल (नकली KYC, फ़िशिंग लिंक, प्रतिरूपण)।

- रिपोर्टिंग पोर्टल: https://sancharsaathi.gov.in

- विवरण:

- प्रेषक का नंबर (भारतीय/अंतरराष्ट्रीय)।

- स्क्रीनशॉट/विवरण।

- संदर्भ (धोखाधड़ी, उत्पीड़न)।

2. सत्यापन और रूटिंग

- चक्षु सीधे संचार को ब्लॉक नहीं करता।

- यह एक रिपोर्टिंग गेटवे है।

- शिकायत दर्ज → विश्लेषण → सत्यापित मामलों को DIP में भेजा जाता है।

3. DIP की कार्रवाई

- DIP बैकएंड सिस्टम है जो समन्वय करता है:

- टेलीकॉम ऑपरेटरों → धोखाधड़ी नंबर ब्लॉक/निष्क्रिय।

- बैंकों/वित्तीय संस्थानों → खातों को फ्रीज़।

- कानून प्रवर्तन एजेंसियों → जांच और कानूनी कार्रवाई।

- अंतरराष्ट्रीय नंबर/OTT अकाउंट भी:

- फ़्लैग किए जाते हैं।

- ऑपरेटर/प्लेटफ़ॉर्म्स के साथ इंटेलिजेंस साझा।

- ब्लॉकिंग/डिसेबलिंग की कार्रवाई।

4. OTT-विशिष्ट हैंडलिंग

- WhatsApp/Telegram जैसे प्लेटफ़ॉर्म्स को रिपोर्ट भेजी जाती है।

- प्रदाता धोखाधड़ी अकाउंट को निलंबित/प्रतिबंधित कर सकता है।

- DIP सुनिश्चित करता है कि टेलीकॉम + OTT + वित्तीय संस्थान मिलकर कार्रवाई करें।

*** नागरिक सुरक्षा**

- ऐप में प्रेषक को ब्लॉक करें।

- लिंक पर क्लिक न करें, OTP साझा न करें।

- सबूत सुरक्षित रखें (स्क्रीनशॉट, लॉग्स)।

- गंभीर मामलों को NCRP (cybercrime.gov.in) या 1930 हेल्पलाइन पर दर्ज करें।

*** मुख्य निष्कर्ष**

- चक्षु = रिपोर्टिंग गेटवे।

- DIP = कार्रवाई इंजन।

- दोनों मिलकर सुनिश्चित करते हैं कि धोखाधड़ी संचार — चाहे भारतीय, अंतरराष्ट्रीय या OTT स्रोत से हो — को फ़्लैग, विश्लेषित और उचित कार्रवाई के लिए संबंधित संस्थानों तक पहुँचाया जाए।

ब्लॉकिंग से आगे कब एस्केलेट करें

यदि संचार में शामिल हैं:

- वित्तीय धोखाधड़ी (UPI, बैंक लिंक, OTP अनुरोध)।

- फ़िशिंग लिंक या मालवेयर अटैचमेंट।

- अधिकारियों/कंपनियों का प्रतिरूपण।

- धमकी या उत्पीड़न।

एस्केलेशन चैनल:

- राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल (NCRP)।

- 1930 हेल्पलाइन।

- स्थानीय पुलिस स्टेशन/साइबर सेल।

*** संरक्षित करने योग्य सबूत**

- संदेशों/कॉल के स्क्रीनशॉट।

- फ़ोन लॉग (नंबर और समय सहित)।

- प्राप्त लिंक या अटैचमेंट।

- लेन-देन का विवरण (यदि धन की मांग/हानि हुई हो)।

नागरिकों के लिए क्रमबद्ध मार्गदर्शिका

1. ऐप/प्लेटफ़ॉर्म पर ब्लॉक और रिपोर्ट करें।

2. किसी लिंक पर क्लिक न करें और OTP साझा न करें।

3. सबूत सुरक्षित रखें (स्क्रीनशॉट, लॉग)।

4. NCRP या 1930 हेल्पलाइन पर रिपोर्ट करें।

5. गंभीर मामलों में पुलिस/साइबर सेल तक एस्केलेट करें।

ऊर्जा और ठंडक के लिए तुलसी बीज दूध — हल्का लेकिन पौष्टिक सुबह का उपाय

पिंकी कुंडू

अगर शरीर में कमजोरी, थकान या गर्मी महसूस हो रही है, तो तुलसी बीज (सब्जा) को दूध के साथ लेना शरीर को ठंडक और पोषण देने में सहायक हो सकता है

क्या करें?

1. रात को ½ चम्मच तुलसी बीज पानी में भिगो दें।
2. सुबह फूलने के बाद इन्हें 1 गिलास दूध के साथ सेवन करें।

इसमें मौजूद पोषक तत्व:

1. तुलसी बीज में फाइबर, ओमेगा-3 फैटी एसिड, कैल्शियम, मैग्नीशियम और एंटीऑक्सीडेंट पाए जाते हैं।
2. दूध में प्रोटीन, कैल्शियम और विटामिन B12 होते हैं।

यह तत्व शरीर की ऊर्जा और पाचन स्वास्थ्य को सपोर्ट करते हैं।

संभावित फायदे:

1. शरीर को ठंडक और हाइड्रेशन प्रदान करता है
2. पाचन सुधारकर शरीर को हल्का रखता है
3. मांसपेशियों और नसों को पोषण देने में सहायक
4. थकान और कमजोरी कम करने में मदद
5. संतुलित आहार के साथ समग्र एक्टिवनेस बनाए रखने में सहायक

कब और कैसे लें?

1. सुबह नियमित सेवन करें।
2. इसे स्मूदी या ठंडे दूध में भी मिलाकर लिया जा सकता है।

महत्वपूर्ण सावधानियां:

1. हमेशा भिगोकर ही सेवन करें
2. अधिक मात्रा में लेने से पेट फूल सकता है
3. किसी पुरानी बीमारी में डॉक्टर से सलाह लें
4. केवल घरेलू उपाय पर निर्भर न रहें

यह एक सहायक पोषण उपाय है। बेहतर स्वास्थ्य के लिए संतुलित डाइट, पर्याप्त पानी, नींद और नियमित व्यायाम भी जरूरी है।

यूरिन में जलन, अपनाए यह नुस्खे

पिंकी कुंडू

आज की भागदौड़ भरी ज़िंदगी, कम पानी पीना और गलत खानपान सेहत पर कई तरह से असर डालता है। ऐसी ही एक आम लेकिन परेशान करने वाली समस्या है, पेशाब के दौरान जलन होना। यह समस्या पुरुषों और महिलाओं दोनों को हो सकती है, और इसके पीछे कई कारण हो सकते हैं, जैसे यूरिनरी ट्रैक्ट इंफेक्शन (UTI), डीहाइड्रेशन, किडनी स्टोन या ज्यादा मसालेदार भोजन का सेवन।

हालांकि गंभीर मामलों में डॉक्टर से सलाह लेना ज़रूरी होता है, लेकिन शुरुआती स्तर पर कुछ घरेलू पेय पदार्थ इस जलन से राहत दिलाने में मददगार हो सकते हैं। आइए जानते हैं वे कौन-सी 3 चीजें हैं जिन्हें पीना शुरू कर देने से पेशाब में जलन से आराम मिल सकता है।

नारियल पानी प्राकृतिक इलेक्ट्रोलाइट्स और पोटैशियम से भरपूर होता है। यह शरीर को हाइड्रेट करता है और यूरिन को डाइल्यूट करता है, जिससे पेशाब के दौरान जलन कम होती है। साथ ही, यह यूरिनरी ट्रैक्ट की सफाई में भी मदद करता है। रोजाना सुबह खाली पेट या दोपहर के समय एक गिलास ताजा नारियल पानी पीना लाभकारी होता है।

बरले वाटर आयुर्वेद में यूरिनरी समस्याओं के लिए रामबाण माना जाता है। यह प्राकृतिक डाइयूरेटिक है, यानी यह पेशाब की मात्रा बढ़ाता है, जिससे संक्रमण फैलने से पहले ही बाहर निकल सकता है। दो चम्मच जौ को एक लीटर पानी में उबालें। ठंडा करके दिन में 2-3 बार पिएं।

धनिए के बीज ठंडक देने वाले होते हैं और यूरिन इन्फेक्शन को कम करने में मदद करते हैं। यह जलन के साथ-साथ यूरिन की दुर्गंध और पीलापन भी घटाता है। एक चम्मच धनिए के बीज रातभर एक गिलास पानी में भिगो दें। सुबह छानकर खाली पेट पी लें। कुछ ही दिनों में असर दिखने लगता है।

पेट में परेशानी अपनाए यह टिप्स

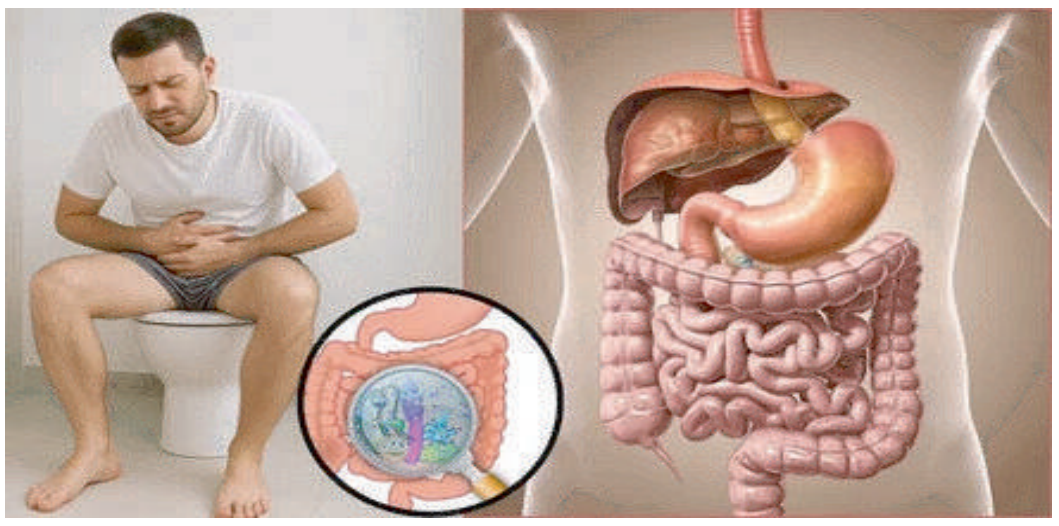

पिंकी कुंडू

आजकल बदलती लाइफस्टाइल और खान-पान की आदतों की वजह से कब्ज, गैस और एसिडिटी जैसी पेट की परेशानियां आम हो गई हैं। यह हल्की दिखने वाली समस्याएं लंबे समय में पाचन तंत्र और सेहत पर गंभीर असर डाल सकती हैं, लेकिन कुछ आसान हेल्दी टिप्स अपनाकर इन परेशानियों से छुटकारा पाया जा सकता है।

सुपर आसान टिप्स पेट की परेशानी दूर करने के लिए

1. पानी खूब पिएं दिन में कम से कम 8-10 गिलास पानी पीए। पानी पाचन को बेहतर बनाता है और कब्ज को दूर करता है।
2. फाइबर युक्त आहार अपनाएं हरी सब्जियां, फल, साबुत अनाज और दालें रोज़ खाने में शामिल करें। फाइबर पेट को साफ रखता है और गैस व एसिडिटी कम करता है।
3. भोजन को धीरे-धीरे खाएं जल्दी खाने से पेट में हवा फंसती है और गैस बनती है। भोजन को अच्छे से चबाकर खाएं।
4. तेल-मसाले का संतुलन रखें ज्यादा तली-भुनी या मसालेदार चीजें गैस और एसिडिटी बढ़ाती हैं। हल्का और घर का बना भोजन पेट के लिए बेहतर है।
5. हिलना-डुलना और हल्की एक्सरसाइज करें खाने के बाद थोड़ी हल्की चाल या स्ट्रेचिंग पेट को हल्का रखती है। नियमित योग और वॉक पाचन सुधारते हैं।
6. गर्म पानी और हर्बल ड्रिंक लें सुबह खाली पेट गुनगुना पानी या हल्का अदरक-नींबू पानी पिएं। यह पेट को साफ करने और गैस कम करने में मदद करता है।

कब डॉक्टर से संपर्क करें?

1. लगातार कब्ज या गैस बनी रहे
2. पेट में बहुत दर्द या सूजन
3. बार-बार उल्टी या भूख न लगना
4. वजन अचानक कम होना

ऐसे लक्षण दिखने पर डॉक्टर की सलाह लेना जरूरी है।

सुपर आसान टिप्स अपनाकर आप पेट की परेशानियों से राहत पा सकते हैं। रोज़ाना पानी, फाइबर, हल्का भोजन और हल्की एक्सरसाइज को डेली रूटीन में शामिल करना सबसे प्रभावी तरीका है।

पैरों के तलवों पर सरसों तेल मालिश — फायदे, तरीका और सावधानियां

पिंकी कुंडू

जैसा कि आप जानते हैं, सरसों का तेल भारतीय घरों में खाना बनाने से लेकर शरीर की मालिश तक सदियों से उपयोग में लिया जाता रहा है। इसमें विटामिन E, ओमेगा फैटी एसिड, एंटीऑक्सीडेंट और एंटीमाइक्रोबियल गुण पाए जाते हैं।

रात में सोने से पहले पैरों के तलवों पर इसकी मालिश करना एक पारंपरिक उपाय है — लेकिन आइए जानते हैं क्या फायदे सच में मिलते हैं और क्या सिर्फ मान्यता है।

संभावित फायदे

1. बेहतर ब्लड सर्कुलेशन दिनभर जूते पहनने से पैरों में रक्त प्रवाह कम हो सकता है। 10–15 मिनट की हल्की मालिश से रक्त संचार बेहतर होता है, जिससे सुन्नपन और थकान में राहत मिलती है।
2. अच्छी नींद में मदद तलवों की मालिश नर्वस सिस्टम को शांत करती है। इससे तनाव कम होता है और नींद गहरी आने में सहायता मिल सकती है।
3. तनाव और बेचैनी में कमी फुट मसाज एक प्रकार की प्राकृतिक रिलैक्सेशन थेरेपी है। नियमित मालिश से मानसिक थकान और चिड़चिड़ापन कम हो सकता है।
4. पैरों के दर्द और सूजन से राहत गुनगुने पानी से धोकर सरसों तेल की मालिश करने से मांसपेशियों को आराम मिलता है और हल्की सूजन कम हो सकती है।
5. त्वचा को मुलायम बनाए सरसों का तेल त्वचा को पोषण देता है, एड़ियों की दरारें कम करने में सहायक हो सकता है।

जिन दावों पर सावधानी रखें

1. आंखों की रोशनी तेज होना – इसका कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।
2. वजन कम होना – सिर्फ तलवों की मालिश से चर्बी नहीं घटती।
3. ब्लड प्रेशर स्थायी रूप से कम होना – मालिश रिलैक्सेशन देती है, पर यह चिकित्सा उपचार का विकल्प नहीं है।

सही तरीका (Step-by-Step)

1. एक टब में गुनगुना पानी लें, 5–6 बूंद तेल डालें।
2. 10 मिनट पैर डुबोकर रखें।
3. तौलिए से सुखाएं।
4. थोड़ा सरसों तेल हल्का गुनगुना करें।
5. तलवों पर गोलाकार गति में 10–15 मिनट मालिश करें।
6. हल्का दबाव दें, खासकर एड़ी और अंगुलियों पर।
7. चाहें तो सूती मोज़े पहन लें।

अतिरिक्त हेल्थ टिप्स (वैज्ञानिक दृष्टि से)

1. जायफल दूध जायफल की बहुत अधिक मात्रा (5 ग्राम रोज़) लेना सुरक्षित नहीं माना जाता।

* सुरक्षित मात्राः चुटकी भर (250–500 mg) पर्याप्त है।

2. भीगा चना / अंकुरित चना प्रोटीन, आयरन, फाइबर से भरपूर

* डायबिटीज में लाभकारी (लो ग्लाइसेमिक)

*वजन नियंत्रण में सहायक

3. अमरूद के पत्ते कुछ रिसर्च में ब्लड शुगर कंट्रोल में सहायक पाए गए हैं, लेकिन डेंगू में प्लेटलेट बढ़ाने का दावा पूरी तरह सिद्ध नहीं है।

निष्कर्ष

1. पैरों के तलवों पर सरसों तेल की मालिश एक सुरक्षित, सरल और आराम देने वाला घरेलू उपाय है।

2. यह तनाव कम करने, नींद सुधारने और पैरों की थकान दूर करने में मदद कर सकता है। लेकिन
3. गंभीर बीमारियों में इसे इलाज का विकल्प नहीं, बल्कि सहायक उपाय समझें।

पीरियड्स और महिलाओं की हेल्थ

पिंकी कुंडू

पीरियड्स एक महिला की हेल्थ का एक ज़रूरी हिस्सा है। लेकिन कई महिलाओं को पीरियड्स के दौरान शारीरिक और मानसिक परेशानी होती है। इसे नज़रअंदाज़ किए बिना इसका ठीक से ध्यान रखना ज़रूरी है।

आम शिकायतें

* पेट दर्द / कमर के निचले हिस्से में दर्द
* पेट फूलना
* ब्रेस्ट में भारीपन
* मूड स्विंग / चिड़चिड़ापन
* पिंपल्स / स्किन प्रॉब्लम

पीरियड्स में गड़बड़ी

* पीरियड्स में गड़बड़ी
* ज़्यादा या हल्की ब्लीडिंग
* 2–3 महीने तक पीरियड्स न आना
* बीच-बीच में ब्लीडिंग

कभी-कभी यह पॉलीसिस्टिक ओवरी सिंड्रोम (PCOS), थायरॉइड प्रॉब्लम या एनीमिया (खून की कमी) की वजह से हो सकता है।

क्या करें?

1. गर्म पानी से शेक करें
2. पत्तेदार सब्जियां, फल, आयरन वाली डाइट
3. हल्की एक्सरसाइज और योग
4. काफ़ी पानी

अगर दर्द बहुत ज़्यादा हो, चक्कर आएं या पीरियड्स लगातार अनियमित हों, तो गाइनेकोलॉजिस्ट से सलाह लें।

खून की कमी (एनीमिया) में चुकंदर-गाजर-अनार का पारंपरिक सलाद नुस्खा

पिंकी कुंडू

अगर शरीर में कमजोरी रहती है, चेहरा पीला दिखता है, जल्दी थकान होती है, सीढ़ियाँ चढ़ते समय सांस फूलती है या बार-बार चक्कर आते हैं, तो यह आयरन की कमी का संकेत हो सकता है। चुकंदर, गाजर और अनार को पोषक तत्वों से भरपूर माना जाता है जो शरीर को जरूरी विटामिन, मिनरल और एंटीऑक्सीडेंट देते हैं।

यह संयोजन क्यों लाभकारी माना जाता है

1. आयरन और फोलेट से भरपूर
2. हीमोग्लोबिन बढ़ाने में सहायक
3. रक्त संचार बेहतर करने में मदद
4. शरीर को प्राकृतिक ऊर्जा प्रदान करे
5. त्वचा में निखार और कमजोरी में सुधार

संभावित फायदे (नियमित सेवन से)

1. थकान में कमी
2. चक्कर आना कम हो सकता है
3. शरीर में स्फूर्ति
4. इम्यूनिटी मजबूत
5. महिलाओं में मासिक कमजोरी में सहायक

बनाने और खाने का सही तरीका

* सामग्री

1. 1 मध्यम आकार का चुकंदर
2. 1 गाजर
3. 1/2 कप अनार के दाने
4. थोड़ा नींबू रस
5. चुटकीभर काला नमक

*** विधि**

1. चुकंदर और गाजर को कद्दूकस करें
2. अनार के दाने मिलाएं
3. ऊपर से नींबू रस और काला नमक डालें
4. अच्छे से मिलाकर ताजा ही सेवन करें
5. दिन में एक बार, दोपहर के भोजन के साथ 30–45 दिन तक लें

बेहतर परिणाम के लिए साथ में ये भी करें

1. गुड़ और भुना चना शामिल करें
2. हरी पत्तेदार सब्जियाँ खाएं
3. विटामिन C युक्त फल लें (नींबू, आंवला)
4. चाय-कॉफी भोजन के तुरंत बाद न लें
5. पर्याप्त पानी पिएं

सावधानियां

1. अगर हीमोग्लोबिन बहुत कम है तो डॉक्टर से जांच कराएं
2. किडनी स्टोन वाले लोग चुकंदर सीमित मात्रा में लें
3. डायबिटीज में अनार मात्रा नियंत्रित रखें
4. लगातार कमजोरी हो तो ब्लड टेस्ट जरूरी

नोट:

1. खून की कमी के कई कारण हो सकते हैं जैसे आयरन की कमी, विटामिन B12 की कमी या थायरॉइड समस्या।
2. घरेलू उपाय सहायक हो सकता है, लेकिन सही कारण जानना और जरूरत पड़ने पर चिकित्सा लेना जरूरी है।

केतु महादशा: जीवन का आध्यात्मिक रूपांतरण

पिंकी कुंडू

वैदिक ज्योतिष में केतु महादशा ७ वर्ष की होती है। केतु एक छाया ग्रह है, जो मुख्य रूप से वैराग्य, आध्यात्मिकता, पिछले जन्म के कर्म, अचानक बदलाव और अलगाव (Detachment) का कारक है। यह कभी-कभी भ्रम और नुकसान भी देता है, लेकिन इसका मुख्य उद्देश्य आत्मा को भौतिकता से दूर कर 'मोक्ष' की ओर ले जाना होता है।

केतु की स्थिति का महत्व केतु जिस भाव में स्थित होता है, उस भाव से संबंधित क्षेत्रों में वह गहरा बदलाव या अलगाव लाता है। सामान्यतः यह दशा चुनौतीपूर्ण होती है, लेकिन 3rd, 6th और 12th भाव में इसे शुभ (विजय और मोक्ष कारक) माना जाता है।

भावों के अनुसार केतु महादशा के फल:

प्रथम भाव (लग्न): व्यक्तित्व में भारी बदलाव और आत्म-खोज। स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव (विशेषकर सिर की समस्या) और अलगाव की भावना, लेकिन नई शुरुआत का योग।

द्वितीय भाव: धन संचय में अस्थिरता और वाणी में कटुता। परिवार से दूरी महसूस हो सकती है, हालांकि मजबूत होने पर अचानक संपत्ति लाभ भी संभव है।

तृतीय भाव: साहस और पराक्रम में वृद्धि। लेखन और संचार के क्षेत्र में सफलता। भाई-बहनों के साथ संबंधों में बदलाव। यह केतु की एक शुभ स्थिति है।

चतुर्थ भाव: माता का स्वास्थ्य और मानसिक शांति प्रभावित हो सकती है। घर या वाहन के सुख में अस्थिरता। व्यक्ति घर से दूर एकांत या आध्यात्मिक शांति की तलाश करता है।

पंचम भाव: संतान प्राप्ति में देरी या संतान से वैचारिक मतभेद। शिक्षा और प्रेम संबंधों में रुकावट, लेकिन आध्यात्मिक बुद्धि का विकास होता है।

षष्ठ भाव (छठा भाव): शत्रुओं पर विजय और रोगों से मुक्ति। कानूनी मामलों में सफलता। नौकरी में अधिक मेहनत के बाद अच्छे परिणाम। यहाँ केतु बहुत शुभ फल देता है।

सप्तम भाव: वैवाहिक जीवन और साझेदारी के लिए कठिन समय। जीवनसाथी से अलगाव या व्यापार में नुकसान की संभावना। यह आध्यात्मिक साथी की ओर भी ले जा सकता है।

अष्टम भाव: यह अत्यधिक परिवर्तनकारी (Transformative) समय है। अचानक दुर्घटना, सर्जरी या रहस्यमयी अनुभव हो सकते हैं। विरासत से धन लाभ और तंत्र-मंत्र (Occult) में रुचि बढ़ती है।

नवम भाव: धर्म और भाग्य में उतार-चढ़ाव। पिता या गुरुओं से मतभेद संभव है। उच्च शिक्षा में बाधा आ सकती है, लेकिन गहन आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति होती है।

दशम भाव: करियर में अचानक बड़े बदलाव या पद से अलगाव। कार्यस्थल पर अधिकारियों से समस्या हो सकती है। यदि केतु मजबूत हो, तो व्यक्ति आध्यात्मिक क्षेत्र में नाम कमाता है।

एकादश भाव: आय के स्रोतों और मित्रों के दायरे में कमी। इच्छाओं की पूर्ति में देरी होती है, लेकिन अचानक लाभ के अवसर भी मिलते हैं।

द्वादश भाव: केतु की सर्वश्रेष्ठ स्थिति। मोक्ष, आध्यात्मिक उन्नति और विदेश यात्रा के प्रबल योग। खर्च बढ़ सकते हैं, लेकिन व्यक्ति सांसारिक मोह से मुक्त होने लगता है।

उपाय और शांति के तरीके:

1. गणेश पूजन: भगवान गणेश की नियमित उपासना और 'ॐ गं गणपतये नमः' का जाप करें।

2. महादेव की शरण: भगवान शिव या भैरव जी की पूजा और 'ॐ केतवे नमः' का जाप सर्वोत्तम है।

3. दान: कुत्ते को रोटी खिलाएं, काले-सफेद कंबल का दान करें।

4. व्रत: मंगलवार या शनिवार को उपवास रखना लाभदायक होता है।

विशेष नोट: सटीक फलादेश के लिए केतु की राशि, नक्षत्र, दृष्टि और कुंडली के लग्न का विश्लेषण अनिवार्य है।

श्रद्धा रखें, महादेव सब मंगल करेंगे।

हर हर महादेव !

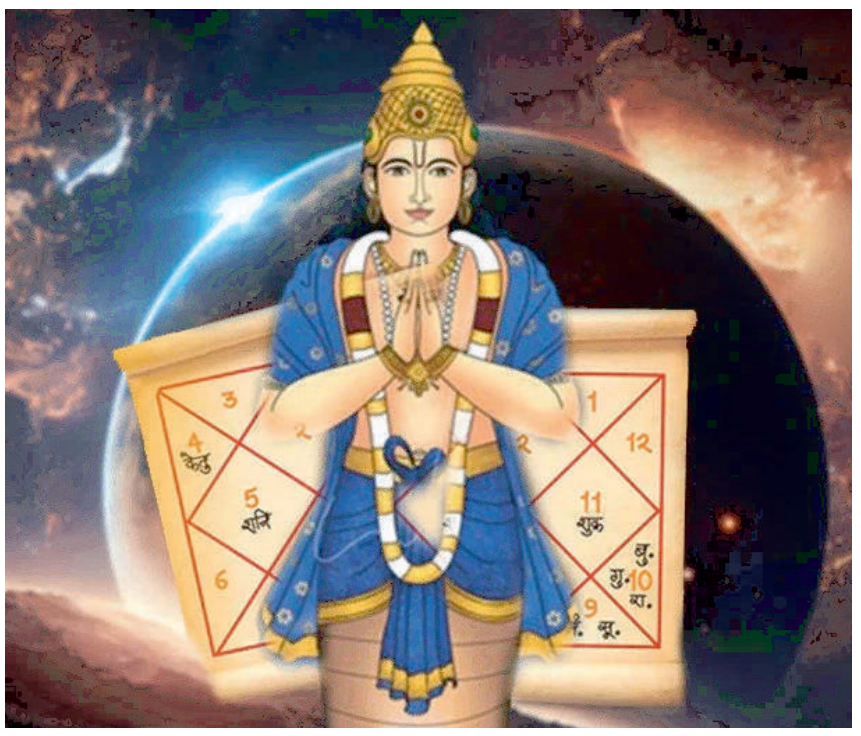

राम नाम की महिमा - शिवजी ने पार्वतीजी को बताया

पिंकी कुंडू

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे। सहस्त्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने।।

ॐ श्री रामाय नमः। ॐ नमः शिवाय। जय बजरंगबली।

आज मैं आपको एक ऐसा अद्भुत प्रसंग बताने जा रही हूँ जो पद्मपुराण के उत्तरखण्ड में वर्णित है। यह प्रसंग है भगवान शिव और माता पार्वती के संवाद का, जिसमें 'श्रीराम' नाम की महिमा का वर्णन किया गया है। यह प्रसंग इतना रोचक और ज्ञानवर्धक है कि इसे पढ़ने के बाद आपको राम नाम की शक्ति का अहसास होगा।

कैलाश पर्वत पर भोजन का प्रसंग एक बार की बात है। भगवान शंकर कैलाश शिखर पर विराजमान थे। उन्होंने माता पार्वती से कहा - ₹हे पार्वति! आज तुम मेरे साथ भोजन करो।₹ माता पार्वती ने कहा - ₹प्रभु! मैं विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करने के बाद ही भोजन करूंगी। आप पहले भोजन कर लें, मैं बाद में कर लूंगी।₹ यह सुनकर भगवान शंकर मुस्कुराए और बोले - ₹हे पार्वति! मैं तो 'राम! राम! राम!' इस प्रकार जप करते हुए 'श्रीराम' नाम में ही निरंतर रमण किया करता हूँ। 'राम' नाम सम्पूर्ण सहस्त्रनाम के समान है। रकारादि जितने भी नाम हैं, उन्हें सुनकर 'राम' नाम की आशंका से ही मेरा मन प्रसन्न हो जाता है।₹

भगवान शंकर ने आगे कहा - ₹राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे। सहस्त्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने।।₹ अर्थात हे सुंदर मुख वाली पार्वति! 'राम, राम, राम' इस प्रकार जप करते हुए मैं राम नाम में ही रमण करता हूँ। यह राम नाम सम्पूर्ण सहस्त्रनाम के समान है। इसलिए हे महादेवि! तुम 'राम' नाम का उच्चारण करके इस समय मेरे साथ भोजन कर लो।

माता पार्वती ने भगवान शंकर के कहे अनुसार 'राम-नाम' का उच्चारण किया और उनके साथ भोजन किया। लेकिन राम-नाम की इतनी महिमा सुनकर उनके मन में और भी जानने की इच्छा जागृत हुई। उन्होंने भगवान शंकर से श्रीराम के और भी नाम जानने की इच्छा प्रकट की।

राम के 108 नामों का रहस्य माता पार्वती की जिज्ञासा देखकर भगवान शंकर ने कहा - ₹हे पार्वति! लौकिक और वैदिक जितने भी शब्द हैं, वे सब श्रीरामचन्द्रजी के ही नाम हैं। उन नामों में उनके सहस्त्रनाम अधिक महत्वपूर्ण हैं और उन सहस्त्रनामों में भी श्रीराम के एक सौ आठ नामों को ही अधिक प्रधानता दी गयी है।₹ यह सुनकर माता पार्वती बहुत प्रसन्न हुईं और उन्होंने भगवान शंकर से वे 108 नाम सुनने की इच्छा प्रकट की।

राम नाम का जाप करने के अद्भुत लाभ राम नाम का जाप करने से अनेक लाभ होते हैं। यह नाम समस्त सहस्त्रनामों के समान फल देने वाला है। राम नाम का जाप करने से भगवान विष्णु की कृपा प्राप्त होती है। भगवान शिव स्वयं इस नाम में रमण करते हैं, इसलिए यह नाम शिवजी को भी अत्यंत प्रिय है। राम नाम का जाप करने से बजरंगबली की कृपा भी प्राप्त होती है, क्योंकि हनुमानजी रामभक्त हैं। जिनको भी बजरंगबली की कृपा पानी है, वे नियमित रूप से राम नाम का जाप करें। हनुमानजी को राम नाम से बढ़कर कुछ भी प्रिय नहीं है। जो सच्चे मन से राम नाम का जाप करता है, उस पर हनुमानजी की असीम कृपा होती है।

राम नाम से सूर्य ग्रह मजबूत होता है राम नाम का जाप करने से सूर्य ग्रह भी मजबूत होता है। भगवान राम सूर्यवंशी थे, उनका जन्म सूर्यवंश में हुआ था। इसलिए राम नाम का जाप करने से सूर्य देव प्रसन्न होते हैं और कुंडली में सूर्य मजबूत होता है। जिन लोगों की कुंडली में सूर्य कमजोर है या सूर्य संबंधी कोई दोष है, उनके लिए राम नाम का जाप अत्यंत लाभकारी है। राम नाम के जाप से आत्मविश्वास बढ़ता है, नेतृत्व क्षमता विकसित होती है और जीवन में ऊर्जा का संचार होता है।

राम नाम का जाप कैसे करें राम नाम का जाप कभी भी, कहीं भी किया जा सकता है। इसके लिए किसी विशेष नियम की आवश्यकता नहीं है। फिर भी कुछ बातों का ध्यान रखें तो अधिक लाभ मिलता है। सुबह स्नान करके स्वच्छ वस्त्र पहनें। किसी शांत स्थान पर बैठें। राम नाम का जाप करते समय भगवान राम का ध्यान करें। आप ₹रामर नाम का या ₹श्री राम जय राम जय जय रामर का जाप कर सकते हैं। राम नाम का जाप करते समय आपकी श्रद्धा और विश्वास ही सबसे महत्वपूर्ण है।

कितना जाप करें राम नाम का जाप आप कम से कम 108 बार रोज कर सकते हैं। यदि संभव हो तो 1 माला या 5 माला जाप करें। राम नाम का जाप करते समय माला का प्रयोग करें। तुलसी की माला सबसे उत्तम है। आप चाहें तो बिना माला के भी जाप कर सकते हैं। राम नाम का जाप मन में भी किया जा सकता है। राम नाम का जाप करते समय पूरा ध्यान राम नाम पर ही रखें।

राम नाम की महिमा राम नाम इतना शक्तिशाली है कि भगवान शिव स्वयं इसका जाप करते हैं। तुलसीदासजी ने कहा है - ₹राम नाम मनिदीप धरु, जीह देहरी द्वार। तुलसी भीतर बाहिरहुँ, जौं चाहसि उजियार।।₹ अर्थात यदि तुम भीतर और बाहर दोनों ओर उजियाला चाहते हो तो अपने मन में राम नाम रूपी दीपक को धारण करो। राम नाम ही वह दीपक है जो जीवन के अंधकार को दूर करता है।

अंतिम बात राम नाम सबसे सरल और सबसे शक्तिशाली मंत्र है। इसे कोई भी, कभी भी, कहीं भी जाप कर सकता है। इसके लिए किसी गुरु की दीक्षा की आवश्यकता नहीं है। बस सच्चे मन से, पूरे विश्वास के साथ राम नाम का जाप करें। देखिए कैसे आपका जीवन बदल जाता है। राम नाम से बढ़कर कोई साधना नहीं है। राम नाम से बढ़कर कोई तप नहीं है। राम नाम से बढ़कर कोई योग नहीं है।

चित्त के विक्षेप ही विघ्न हैं

पिंकी कुंडू

यह एक नहीं नौ हैं - यह सभी विक्षेप मन्त्र के जाप से समाप्त हो जाते हैं।

एक ब्याधि बस नर मरहिं ए असाधि बहु ब्याधि।

पीड़हिं संतत जीव कहुँ सो किमि लहै समाधि॥

एक ही रोग के वश होकर मनुष्य मर जाते हैं, फिर ये तो बहुत से असाध्य रोग हैं। ये जीव को निरंतर कष्ट देते रहते हैं, ऐसी दशा में वह समाधि (शांति) को कैसे प्राप्त करे?॥

1. व्याधि या रोग : - शरीर या मन में रोग का उत्पन्न होना। रोग तभी होता है जब जैव विद्युत चक्र अव्यवस्थित हो जाता है। इसके प्रवाह में व्यतिक्रम या व्यतिरेक उठ खड़े होते हैं। इस स्थिति में व्यक्ति रोगी हो जाता है क्योंकि रोग उसे घेर लेते हैं। जैव विद्युत चक्र को लयबद्ध कर देने से रोग ठीक हो जाते हैं। यह जान लें कि मन्त्र जाप से प्राण विद्युत के चक्र में आने वाली बाधाओं का निराकरण किया जाता है और साधक को ब्रह्माण्डीय ऊर्जा का एक बड़ा अंश प्राप्त होता है।

2. अकर्मण्यता : - काम न करने की प्रवृत्ति, अकर्मण्यता तभी आती है जब हममें ऊर्जा का स्रोत निर्बल होता है। तब हम स्वयं को शिथिल व निर्बल पाते हैं। मन्त्र जप से ब्रह्माण्डीय ऊसाह में बदल जाती है।

3. संशय या सन्देह : - साधना के परिणाम एवं स्वयं की क्षमता पर सन्देह है। दृढ़ता के विरूद्ध ही संशय है। इससे मानसिक ऊर्जा कई भागों में विभाजित हो जाती है। मन्त्र प्रयोग से संशय का कोई स्थान नहीं रहता है।

4. प्रमाद : - आध्यात्मिक अनुष्ठानों की अवहेलना करना ही है। प्रमाद सदैव मन में होता है। ऐसे में मन मूर्छित अवस्था में होता है। होश खोया मन प्रमादी होता है। मन्त्र जप से मन को होश में लाया जा सकता है।

5. आलस्य : - तमोगुण की वृद्धि से साधना को बीच में ही छोड़ देना है क्योंकि चित्त और शरीर दोनों भारी हो जाते हैं। आलस्य एक प्रकार से जीवन के प्रति उत्साह खोना है। बच्चे कभी नहीं थकते क्योंकि उनके पास ऊर्जा का अक्षय भण्डार होता है। मन्त्र जाप से ऊर्जा का ऊर्ध्वगमन होने लगता है जिसके फलस्वरूप साधक में नए उत्साह की अनुभूति जागती है और वह आलसी नहीं रहता है।

6. अविरति : - विषय वासना में आसक्त होना है जिस कारण वैराग्य का अभाव हो जाता है। विषयासक्ति शरीर और मन की एकत्र ऊर्जा का व्यय न हो पाने से होती है। मन्त्र साधना से ऊर्जा का उर्ध्वगमन या व्यय होता है जिससे विषयासक्ति छंट जाती है।

7. भ्रान्ति : - साधना को किसी कारण अपने प्रतिकूल मान लेना ही है। भ्रान्ति खुली आंखों से स्वप्न देखना है। मन्त्र जाप से जाग्रत हो जाता है साधक और भ्रान्ति रहती नहीं है।

8. अलब्धता : - उपलब्धि न मिलने से उपजी निराशा ही है। दुर्बलता असहाय एवं दुर्बल करती है। सामर्थ्य पूर्ण न होने से विराट से स्वयं को अलग अनुभूत करने से दुर्बलता आती है। मन्त्र जाप से हम विराट चेतना से जोड़ता है जिससे सिद्धि वश साध्य दिखने लगता है और दुर्बलता दिखती नहीं है।

9. अस्थिरता : - स्थिरता की स्थिति में न टिक पाना ही अस्थिरता है। अस्थिरता बहाने ही हैं। कुछ करने से पूर्व ही न करने के अनेक बहाने ढूंढ या गढ़ लेते हैं। बहाने बनाना अस्थिरता ही है। मन्त्र जप दृढ़ता से होने पर सजगता आ जाती है और चित्त साधना में रत रहता है।इसमें निरन्तरता आती रहे तो सब विक्षेप हट जाते हैं और साधक साध्य की प्राप्ति में खो जाता है और एक नई अनुभूति में लिप्त होकर दूजों को मार्ग दिखाने लगता है।

मंत्र कौन सा जपे

श्रीराम जय राम जय जय राम।
महामंत्र जोइ जपत महेसू।
कासीं मुकुति हेतु उपदेसू॥
महिमा जासु जान गनराऊ।
प्रथम पूजिअत नाम प्रभाऊ॥

भावार्थ: - जो महामंत्र है, जिसे महेश्वर श्री शिवजी जपते हैं और उनके द्वारा जिसका उपदेश काशी में मुक्ति का कारण है तथा जिसकी महिमा को गणेशजी जानते हैं, जो इस 'राम' नाम के प्रभाव से ही सबसे पहले पूजे जाते हैं॥

होली – अध्यात्म और आयुर्वेद का दिव्य संगम

पिंकी कुंडू

होली सिर्फ़ रंगों का त्योहार नहीं है, यह अधर्म पर धर्म की जीत और तन और मन को शुद्ध करने का एक पवित्र समय ठंड खत्म होने और गर्मी शुरू होने पर आने वाला यह मौसमी बदलाव हमारी सेहत के लिए बहुत ज़रूरी है।

1. होली के आध्यात्मिक रहस्य

* प्रह्लाद और होलिका

* अहंकार, अत्याचार और गलत काम जलकर राख हो जाते हैं लेकिन विश्वास और भक्ति हमेशा जिंदा रहती है।

* कामदहन कथा – भगवान शंकर हमारे मन में काम, क्रोध, लालच जैसे विकार, उन्हें होली की आग में जला दें और एक नई पॉजिटिव शुरुआत करें।

* होली अहंकार के समर्पण और आत्म-शुद्धि का उत्सव है

2. होली और आयुर्वेद आयुर्वेद के अनुसार, यह समय ऋतुओं के बदलाव का होता है। सर्दियों में जमा हुआ कफ दोष इस समय बढ़ जाता है। होली की आग की गर्मी शरीर में कफ को कम करने में मदद करती है।

* नीम, गाय के गोबर और घी का धुआं वातावरण को शुद्ध करता है।

* नेचुरल रंगों के फ़ायदे

* पलास – स्किन के लिए अच्छा, ब्लड सर्कुलेशन बेहतर करता है

* हल्दी – एंटीबैक्टीरियल

* नीम – स्किन को बचाता है

* रंगों से खेलने से शरीर में हैप्पी हॉर्मोन (एंडोर्फिन) बढ़ते हैं

* कम स्ट्रेस, ज़्यादा उत्साह!

* होली के पारंपरिक हेल्थ सीक्रेट्स

* पूरनपोली – दाल और गुड़

* डाइजेशन बेहतर करता है

* एनर्जी बढ़ाता है

* मौसमी बदलावों के दौरान शरीर को मजबूत बनाता है

* होली शरीर और मन की गंदगी को जलाने का सुनहरा मौका है

* पॉजिटिव सोचें

* नेगेटिविटी को जलाएं

* हेल्थ और खुशी चुनें।

होलिका दहन एवं रंगोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं

असत्य, अत्याचार, अराजकता और अहंकार पर सत्य, साहस और सद्भाव की विजय के प्रतीक होलिका दहन के इस पावन पर्व पर आप सभी को हमारे परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

यह पावन अग्नि आपके जीवन की सभी प्रकार की नकारात्मकता, द्वेष, भय और अहंकार का दहन करे। आपका जीवन सत्य, विश्वास, प्रेम एवं सकारात्मकता के प्रकाश से सदैव उज्ज्वल रहे।

रंगों का त्योहार-प्रेम का उत्सव

होली का यह मंगलमय पर्व

आपके जीवन में खुशियों के रंग, मन में प्रेम की उमंग,

और रिश्तों में अटूट विश्वास का संग भर दे।

न कोई अपना–पराया रहे,

न कोई उंच–नीच का भेद रहे,

हर हृदय में बस एक ही संदेश गूंजे—

हम सब एक हैं, हम सब एक परिवार हैं।

बड़ी होली की पावन अग्नि

हर मन से द्वेष और अहंकार को जलाए,

और रंगों की होली

सद्भावना, समरसता, समानता और भाईचारे का नया अध्याय लिख जाए।

"वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना के साथ

आप सभी को होलिका दहन और होली की मंगलमय, आनंदमयी एवं प्रेमपूर्ण हार्दिक शुभकामनाएँ।

ईश्वर के आशीर्वाद से यह पर्व आपके जीवन में स्वास्थ्य, सुख, समृद्धि और शांति लेकर आए।

सप्रेम

आपका अपना

प्रो.(डॉ)मनोज कुमार कैन

यूएचबीवीएन परिसर व सरकारी दफ्तरों के आसपास 200 मीटर क्षेत्र में धरना-प्रदर्शन पर प्रतिबंध : डीसी

धारा 163 भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 के तहत आदेश जारी, उल्लंघन पर होगी कार्रवाई

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 2 मार्च। हरियाणा पावर कॉर्पोरेशन वर्कर्स यूनियन द्वारा यूएचबीवीएन, झज्जर परिसर में प्रस्तावित हड़ताल के मद्देनजर जिला मजिस्ट्रेट एवं उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने संभावित कानून-व्यवस्था स्थिति को देखते हुए भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 की धारा 163 के तहत निषेधाज्ञा जारी की है। आदेश के अनुसार झज्जर जिले में स्थित यूएचबीवीएन परिसर तथा अन्य सरकारी परिसरों के 200 मीटर के दायरे में किसी भी प्रकार के धरना, प्रदर्शन, नारेबाजी, सभा, मार्च, तंबू लगाने या अवरोधक गतिविधि पर पूर्ण प्रतिबंध रहेगा।

जारी आदेश में स्पष्ट किया गया है कि सार्वजनिक सेवाओं में बाधा डालने, बिजली निगम के कार्यों में हस्तक्षेप करने तथा अधिकारियों-कर्मचारियों की आवाजाही प्रभावित करने का कोई भी प्रयास वर्जित होगा। प्रतिबंधित क्षेत्र में पांच या उससे अधिक व्यक्तियों के एकत्र होने पर भी रोक रहेगी।

आदेश के तहत प्रतिबंधित क्षेत्रों में शस्त्र, गोला-बारूद, लाठी-डंडे, धारदार हथियार (म्यान में रखे कृपाण को छोडक़र) तथा किसी भी प्रकार के ज्वलनशील पदार्थ ले जाना भी पूर्णतः प्रतिबंधित किया गया है।

डीसी ने पुलिस प्रशासन को निर्देश दिए हैं कि सरकारी प्रतिष्ठानों और महत्वपूर्ण संस्थानों पर पर्याप्त पुलिस बल तैनात किया जाए तथा किसी भी गैरकानूनी सभा या अवैध संरचना को तुरंत हटाया जाए, ताकि आवश्यक सेवाएं निर्बाध रूप से संचालित होती रहें। यह आदेश ड्यूटी पर तैनात पुलिस, सशस्त्र बल, होमगार्ड एवं अधिकृत सरकारी कर्मचारियों पर लागू नहीं होगा। आदेश का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध भारतीय न्याय संहिता की धारा 223 सहित अन्य प्रासंगिक कानूनी प्रावधानों के तहत कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

जिला मजिस्ट्रेट द्वारा जारी यह आदेश 2 मार्च 2026 से तत्काल प्रभाव से लागू हो गया है और आगामी आदेश तक प्रभावी रहेगा।

एसडीएम ने किया नागरिक अस्पताल का औचक निरीक्षण

मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने हेतु कमियों के त्वरित समाधान के दिए निर्देश

परिवहन विशेष न्यूज

बहादुरगढ़, 2 मार्च। उपमंडल अधिकारी (नागरिक) अभिनव सिवाच ने सोमवार को शहर स्थित नागरिक अस्पताल का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने चिकित्सा अधिकारियों के साथ अस्पताल परिसर के सभी चारों ब्लॉकों का विस्तृत दौरा कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया।

निरीक्षण के दौरान एसडीएम ने अस्पताल में उपलब्ध चिकित्सा सेवाओं, साफ-सफाई व्यवस्था, दवाइयों की उपलब्धता, जांच सुविधाएं तथा मरीजों को दी जा रही अन्य सुविधाओं की स्थिति की समीक्षा की। उन्होंने संबंधित अधिकारियों से विभिन्न व्यवस्थाओं के संबंध में जानकारी प्राप्त की तथा मौके पर ही आवश्यक दिशा निर्देश दिए। एसडीएम अभिनव सिवाच ने कहा कि निरीक्षण का उद्देश्य अस्पताल में आने वाले मरीजों को गुणवत्तापूर्ण एवं निर्बाध स्वास्थ्य सेवाएं सुनिश्चित करना है। उन्होंने स्पष्ट किया कि निरीक्षण के दौरान जो भी समस्याएं सामने आई हैं, उनके समाधान के लिए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दे दिए गए हैं और प्राथमिकता के आधार पर सभी कमियों को दूर किया जाएगा। उन्होंने कहा कि सरकार का मुख्य ध्येय आमजन को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना है, ताकि किसी भी मरीज को उपचार या जांच संबंधी सुविधा प्राप्त करने में किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े। इसी उद्देश्य से नागरिक अस्पताल का औचक निरीक्षण किया गया। उन्होंने निर्माणाधीन ब्लॉक का भी जायजा लिया।

इस अवसर पर पीएमओ डॉ. मंजू कादयान, एसएमओ डॉ. विनय देशवाल सहित अन्य चिकित्सा अधिकारी उपस्थित रहे।

वन क्षेत्रों की पहचान पर्यावरण संरक्षण के लिए बेहद जरूरी : डीसी

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल की अध्यक्षता में जिला भर में वन जैसे क्षेत्रों की पहचान को लेकर बैठक आयोजित

झज्जर, 2 मार्च। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल की अध्यक्षता में सोमवार को लघु सचिवालय स्थित कॉन्फ्रेंस हॉल में वन क्षेत्रों की पहचान से संबंधित विवरणों को अंतिम रूप देने के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में विभिन्न विभागों के अधिकारियों के साथ विषय पर विस्तार से चर्चा की गई और आवश्यक दिशा-निर्देश गए।

डीसी ने कहा कि वन जैसे क्षेत्रों की पहचान पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है, इसलिए इस प्रक्रिया को गंभीरता, पारदर्शिता और निर्धारित मानकों के अनुरूप पूरा किया जाए। उन्होंने कहा कि संबंधित विभाग आपसी समन्वय बनाते हुए उपलब्ध राजस्व रिकॉर्ड, सैटेलाइट मैप, विभागीय अभिलेख तथा फील्ड रिपोर्ट का सूक्ष्म परीक्षण सुनिश्चित करें, ताकि चिन्हित किए जाने वाले क्षेत्रों की स्थिति स्पष्ट और तथ्यात्मक रूप से प्रमाणित हो सके।

उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि चिन्हांकन की प्रक्रिया के दौरान किसी भी प्रकार की विसंगति से बचने के लिए संयुक्त निरीक्षण भी आवश्यकतानुसार किया जाए तथा प्रत्येक चरण का उचित दस्तावेजीकरण किया जाए।

उपायुक्त ने कहा कि वन क्षेत्रों से सम्बंधित रिपोर्ट को समयबद्ध रूप से अंतिम रूप देते हुए उच्च स्तर पर भेजा जाए, जिससे आगामी कार्यवाही अमल में लाई जा सके।

डीसी ने यह भी निर्देश दिए गए कि वन जैसे क्षेत्रों की पहचान से संबंधित सभी आंकड़ों को एकीकृत प्रारूप में संकलित किया जाए और यदि किसी प्रकार की तकनीकी या प्रशासनिक बाधा आती है तो उसे तुरंत जिला प्रशासन के संज्ञान में लाया जाए। उन्होंने स्पष्ट किया कि इस कार्य में लापरवाही या अनावश्यक विलंब स्वीकार्य नहीं होगा और सभी विभाग निर्धारित समयसीमा का पालन सुनिश्चित करें।

उपायुक्त ने कहा कि पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए ऐसे क्षेत्रों की सही पहचान अत्यंत आवश्यक है। इससे भविष्य की योजना निर्माण प्रक्रिया में भी सहायता मिलेगी और विकास कार्यों के साथ पर्यावरण संरक्षण का संतुलन सुनिश्चित किया जा सकेगा।

स्कॉलरशिप पोर्टल पर आवेदनों के सत्यापन कार्य में तेजी लाएं विभाग : डीसी

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने अधिकारियों की बैठक में की एनएसपी पोर्टल से जुड़ी योजनाओं की समीक्षा

पोस्ट मैट्रिक स्कॉलरशिप और ओबीसी, ईबीसी व डीएनटी पीएम यशस्वी पोस्ट मैट्रिक स्कॉलरशिप योजना को लेकर दिए जरूरी निर्देश

झज्जर, 02 मार्च। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि केंद्र व राज्य सरकार द्वारा संचालित पोस्ट-मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना का मुख्य उद्देश्य आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करना तथा उन्हें वित्तीय सहायता उपलब्ध कराना है। इसके लिए सभी संबंधित विभाग आपसी समन्वय के साथ कार्य करें और पात्र छात्रों को प्रक्रिया के बारे में सरल एवं पारदर्शी तरीके से जानकारी दें।

डीसी सोमवार को लघु सचिवालय स्थित कार्यालय में अनुसूचित जाति एवं पिछड़ा वर्ग के छात्रों के लिए संचालित पोस्ट-मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना की समीक्षा कर रहे थे। बैठक में योजना की प्रगति, प्राप्त आवेदनों, सत्यापन की स्थिति तथा लंबित मामलों की विस्तार से समीक्षा की गई। छात्रवृत्ति के लिए एससी वर्ग के कुल 1787 आवेदन तथा पिछड़ा वर्ग के 1155 बच्चों के आवेदन प्राप्त किए गए हैं।

डीसी ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि पोर्टल पर प्राप्त आवेदनों के सत्यापन कार्य में तेजी लाई जाए। उन्होंने कहा कि सत्यापन प्रक्रिया में अनावश्यक देरी किसी भी स्तर पर बर्दाश्त नहीं की जाएगी। इसलिए इस कार्य को गंभीरता और जिम्मेदारी के साथ पूरा किया जाए।

उन्होंने यह भी निर्देश दिए कि सभी शिक्षण संस्थान पात्र विद्यार्थियों की पहचान कर उन्हें आवेदन प्रक्रिया में आवश्यक सहयोग प्रदान करें। विद्यार्थियों को दस्तावेज अपलोड करने, बैंक खाते से संबंधित जानकारी सही भरने तथा अन्य औपचारिकताओं को समय पर पूरा करने के लिए मार्गदर्शन दिया जाए, ताकि आवेदन निरस्त होने की स्थिति से बचा जा सके।

उन्होंने अधिकारियों से कहा कि छात्रवृत्ति योजनाएं सामाजिक समानता को बढ़ावा देने का महत्वपूर्ण माध्यम हैं। इन योजनाओं के माध्यम से समाज के कमजोर वर्गों के विद्यार्थियों को आगे बढ़ने का अवसर मिलता है, जिससे उनका भविष्य सशक्त होता है और राष्ट्र निर्माण में उनकी भागीदारी सुनिश्चित होती है। इसलिए सभी अधिकारी इस कार्य को मिशन मोड में पूरा करें और नियमित रूप से प्रगति की समीक्षा करते रहें।

इस दौरान सीटीएम नमिता कुमारी, डीईओ रतिंद्र कुमार, डीआईओ अमित बंसल सहित अन्य संबंधित अधिकारीगण मौजूद रहे।

डीसी ने जिला वासियों को दी फाग उत्सव की बधाई

– आपसी भाईचारे के साथ मिलजुल कर त्यौहार मनाने से बढ़ती है पर्व की गरिमा – डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल

झज्जर, 02 मार्च। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने बुधवार 04 मार्च को मनाए जाने वाले रंगों के त्यौहार धुल्हंडी की जिला वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं दी हैं। रंगों के पर्व दुल्हंडी के अवसर पर अपने शुभकामना संदेश में डीसी ने जिलावासियों से अनुरोध भी किया कि नफरत व कटुता को खत्म करें ताकि समाज में भाईचारा व एकता की भावना का विकास हो। उन्होंने कहा कि जल बर्बाद न करें और हर्षोल्लास के साथ त्योहार मनाएं। उन्होंने कहा कि रंगों के त्यौहार होली को आपसी भाईचारा व उल्लास के साथ मनाया जाना चाहिए। भारतीय संस्कृति में त्योहारों का विशेष महत्व है। सभी त्यौहार सामाजिक सौहार्द का संदेश देते हैं। उन्होंने कहा कि होली के उपलक्ष्य में अक्सर जिला में दंगल व अन्य कार्यक्रम आयोजित होते हैं। इन आयोजनों में भागीदारी करने से भी पर्व की गरिमा बढ़ती है। उन्होंने दुल्हेंडी को लेकर जिला निवासियों विशेषकर नौजवानों से आह्वान करते हुए कहा कि नशा करके वाहन न चलाएं व हुड़दंग न मचाएं, एक दूसरे के साथ मिलजुल कर त्यौहार मनाएं। किसी भी पर्व की गरिमा सौहार्द से बनती है। ऐसे में सभी जिलावासी दुल्हंडी पर उमंग व उल्लास के साथ पर्व की शोभा बढ़ाए।

परीक्षाओं में किसी प्रकार की अनियमिताएं बर्दाश्त नहीं : एसडीएम

एसडीएम रेणुका नांदल ने गांव डीघल स्थित परीक्षा केंद्र का किया औचक निरीक्षण

परिवहन विशेष न्यूज

बेरी (झज्जर), 02 मार्च। उपमंडल में हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड की परीक्षाओं के नकल रहित संचालन के लिए डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल के दिशा-निर्देशन में उपमंडल प्रशासन मुस्तैदी से कार्य कर रहा है। बोर्ड परीक्षाओं के सुचारू रूप से संचालन को लेकर एसडीएम रेणुका नांदल ने सोमवार को डीघल स्कूल में बने परीक्षा केंद्र का औचक निरीक्षण किया।

एसडीएम रेणुका नांदल ने शिक्षा विभाग के अधिकारियों को कड़े निर्देश देते हुए कहा कि नकल रहित परीक्षा संचालन के लिए जीरो टॉलरेंस पर काम करें। अगर कहीं भी गड़बड़ी की शिकायत मिलती है तो तुरंत एक्शन लें। उन्होंने कहा कि परीक्षा केंद्रों पर कोई भी अवांछित गतिविधि नहीं होने दी जाए, नकल रहित परीक्षा का संचालन कराना प्रशासन का दायित्व है। उन्होंने कहा कि परीक्षा केंद्रों पर नियुक्त सभी अधिकारी और कर्मचारी ईमानदारी और सत्यनिष्ठा से कार्य करें। उन्होंने कहा कि परीक्षा के दौरान किसी भी तरह की अनियमितता को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

उन्होंने परीक्षा केंद्रों पर तैनात पुलिसकर्मियों को सुरक्षा के पुख्ता प्रबंध करने के सख्त निर्देश देते हुए कहा कि कोई भी अनाधिकृत व्यक्ति परीक्षा केंद्र की सीमा में ना घुसे यह सुनिश्चित किया जाए। परीक्षा केंद्र की निर्धारित सीमा में झुंड बनाकर खड़े होने वाले लोगों के खिलाफ भी कानूनी कार्रवाई करें।

दहेज निषेध विषय पर कानूनी जागरूकता शिविरों का आयोजन 5 से 10 मार्च तक

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 2 मार्च। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, झज्जर के मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी -कम सचिव के निर्देशानुसार दहेज निषेध विषय पर कानूनी जागरूकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विभिन्न गांवों में विधिक जागरूकता शिविर आयोजित किए जाएंगे। यह शिविर हरियाणा राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, पंचकूला के निर्देशों की अनुपालना में आयोजित किए जा रहे हैं, जिनमें माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा 15 दिसंबर 2025 को पारित निर्णय के संबंध में भी जानकारी दी जाएगी।

प्राधिकरण से प्राप्त जानकारी के अनुसार पैरा लीगल वालंटियर्स द्वारा 5 मार्च को रेवाड़ी-खेड़ा व भदाना, 6 मार्च को सुबाना व ढाकला, 9 मार्च को बरानी व लुक्सर तथा 10 मार्च को तलाव व बाबरा गांव में शिविर लगाए जाएंगे।

इन शिविरों में आमजन को दहेज निषेध कानून, महिलाओं के अधिकारों तथा संबंधित कानूनी प्रावधानों के बारे में विस्तृत जानकारी दी जाएगी, ताकि समाज में जागरूकता बढ़े और दहेज प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियों पर प्रभावी अंकुश लगाया जा सके।

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण ने नागरिकों से इन शिविरों में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेकर कार्यक्रम का लाभ उठाने की अपील की है।

झज्जर में बिजली उपभोक्ताओं की शिकायतों की सुनवाई के लिए बिजली अदालत आज

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, उपभोक्ताओं की बिजली संबंधी समस्याओं के त्वरित समाधान के लिए उत्तर हरियाणा बिजली वितरण निगम (यूएचबीवीएन) द्वारा अधीक्षण अभियंता कार्यालय में 03 मार्च मंगलवार को उपभोक्ता कष्ट निवारण फोरम की बैठक एवं बिजली अदालत का आयोजन किया जाएगा। उपभोक्ता कष्ट निवारण फोरम की बैठक का आयोजन सुबह 11 बजे से दोपहर दो बजे तक किया जाएगा। यह अदालत फोरम के चेयरमैन एवं बिजली निगम के अधीक्षण अभियंता ऑपरेशन सर्कल झज्जर की अध्यक्षता में होगी। प्रवक्ता ने जानकारी देते हुए बताया कि बिजली उपभोक्ताओं की (बिजली चोरी संबंधी शिकायतों को छोडकर) अन्य शिकायतों को झज्जर कार्यालय में सुना जाएगा। इस दौरान बिजली बिल, कनेक्शन और अन्य तकनीकी समस्याओं से जुड़े परिवादों की समीक्षा की जाएगी। उन्होंने बताया कि बिजली उपभोक्ताओं की समस्याओं का निवारण किया जाएगा। यदि कोई उपभोक्ता कार्यकारी अभियंता या एसडीओ की कार्यवाही से संतुष्ट नहीं है, तो वह चेयरमैन और अधीक्षण अभियंता के समक्ष अपनी बात रख सकता है।

अधिकारी समाधान शिविर की हर शिकायत का यथाशीघ्र करें उचित निपटारा : डीसी

एक छत के नीचे सभी विभागों से संबंधित हर शिकायत के तुरंत निपटारे के उद्देश्य से आयोजित किये जा रहे समाधान शिविर

झज्जर, 02 मार्च। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि वे समाधान शिविर में प्राप्त हर शिकायत का यथाशीघ्र उचित निपटारा सुनिश्चित करें। समाधान शिविर में हर विभाग से संबंधित हर शिकायत का एक छत के नीचे तुरंत निपटारा करने का लक्ष्य रखा गया है।

डीसी स्थानीय लघु सचिवालय स्थित सभागार में सोमवार को आयोजित समाधान शिविर में नागरिकों की समस्याओं की सुनवाई कर रहे थे। इस अवसर पर एडीसी जगनिवास, एसडीएम झज्जर अंकित कुमार चौकसे, सीटीएम नमिता कुमारी, एसीपी दिनेश कुमार, एक्सईन लोक निर्माण विभाग सुमित कुमार, जिला कष्ट निवारण समिति के सदस्य गौरव सैनी सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के निर्देशानुसार जिला प्रशासन द्वारा हर सोमवार व वीरवार को सुबह 10 से 12 बजे तक जिला मुख्यालय एवं बहादुरगढ़, बेरी व बादली उपमंडल मुख्यालयों पर समाधान शिविर आयोजित किए जा रहे हैं।

डीसी ने अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि वे समाधान शिविरों की शिकायतों का निपटारा करते समय संबंधित नागरिक से संवाद करें। अधिकारी नागरिक को शिकायत निपटारे के लिए विभाग द्वारा की जा रही कार्यवाही की जानकारी देकर संतुष्ट करें, ताकि शिकायत का स्थायी समाधान हो सके।

बहादुरगढ़ में बिजली उपभोक्ताओं की सुनवाई के लिए बिजली अदालत आज (मंगलवार 3 मार्च)

बहादुरगढ़, 02 मार्च। उपभोक्ताओं की बिजली संबंधी समस्याओं के त्वरित समाधान के लिए उत्तर हरियाणा बिजली वितरण निगम (यूएचबीवीएन) द्वारा कार्यकारी अभियंता कार्यालय बहादुरगढ़ में आज (03 मार्च मंगलवार) को बिजली अदालत व उपभोक्ता कष्ट निवारण फोरम की बैठक का आयोजन किया जाएगा। सुबह 11 बजे से एक बजे तक बिजली अदालत व उपभोक्ता कष्ट निवारण फोरम का आयोजन होगा। यह अदालत फोरम के चेयरमैन एवं बिजली निगम के कार्यकारी अभियंता बहादुरगढ़ की अध्यक्षता में होगी। प्रवक्ता ने जानकारी देते हुए बताया कि बिजली उपभोक्ताओं की शिकायतों को बहादुरगढ़ कार्यालय में सुना जाएगा। इस दौरान (बिजली चोरी की समस्याओं को छोडक़र) बिजली बिल, कनेक्शन और अन्य तकनीकी समस्याओं से जुड़े परिवादों की समीक्षा की जाएगी। उन्होंने बताया कि इसी प्रकार फरवरी माह की 10, 17 व 24 तारीख को भी बिजली अदालत व उपभोक्ता कष्ट निवारण फोरम की बैठक का आयोजन किया जाएगा।

सेवा संकल्प की पुनर्पुष्टि: उर्वरक विभाग ने दोहराया प्रधानमंत्री का संकल्प

संगिनी घोष

सचिव रजत कुमार मिश्र की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम उर्वरक विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों ने सचिव रजत कुमार मिश्र की अध्यक्षता में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के "सेवा संकल्प" को पुनः दोहराया। कार्यक्रम का उद्देश्य जनसेवा की भावना को सुदृढ़ करना और राष्ट्र निर्माण के व्यापक लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्धता व्यक्त करना था।

ऐसे देखें तो, यह केवल एक औपचारिक आयोजन नहीं बल्कि प्रशासनिक तंत्र में उत्तरदायित्व और सेवा भावना को मजबूत करने की पहल के रूप में देखा जा सकता है।

सेवा भाव और राष्ट्र निर्माण पर जोर

कार्यक्रम के दौरान अधिकारियों ने देशवासियों के प्रति समर्पित सेवा, पारदर्शिता और कुशल कार्यप्रणाली को प्राथमिकता देने का संकल्प लिया। सचिव रजत कुमार मिश्र ने कहा कि उर्वरक क्षेत्र कृषि उत्पादन और खाद्य सुरक्षा से सीधे जुड़ा है, इसलिए विभाग की जिम्मेदारी और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है।

कृषि और किसानों से जुड़ा दायित्व

उर्वरक विभाग की भूमिका किसानों तक समय पर उर्वरक उपलब्ध कराने और कृषि क्षेत्र को समर्थन देने में अहम है। अधिकारियों ने इस बात पर बल दिया कि योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन और समयबद्ध आपूर्ति से किसानों को प्रत्यक्ष लाभ पहुंचता है।

यह पहल क्यों महत्वपूर्ण है ?

विशेषज्ञों का मानना है कि सरकारी विभागों में सेवा-उन्मुख दृष्टिकोण प्रशासनिक दक्षता को बढ़ाता है और नागरिकों का विश्वास मजबूत करता है। विशेष रूप से कृषि से जुड़े विभागों में जवाबदेही और पारदर्शिता राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा के लिए आवश्यक है।

ऐसे देखें तो, सेवा संकल्प की पुनर्पुष्टि प्रशासन को नागरिक-केंद्रित और परिणामोन्मुख बनाने की दिशा में एक सकारात्मक कदम है।

मुख्य बिंदु

* उर्वरक विभाग ने सेवा संकल्प दोहराया।
* कार्यक्रम की अध्यक्षता सचिव रजत कुमार मिश्र ने की।
* प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सेवा भाव को केंद्र में रखा गया।
* राष्ट्र निर्माण और जनसेवा पर जोर।
* कृषि और खाद्य सुरक्षा से जुड़ी जिम्मेदारियों पर चर्चा।
* पारदर्शिता और दक्षता बढ़ाने की प्रतिबद्धता।

आगे की दिशा

विश्लेषकों का कहना है कि यदि सेवा-उन्मुख प्रशासनिक दृष्टिकोण को निरंतर अपनाया जाए, तो इससे योजनाओं के क्रियान्वयन में सुधार और किसानों को प्रत्यक्ष लाभ सुनिश्चित किया जा सकता है। आने वाले समय में विभागीय कार्यप्रणाली की प्रभावशीलता ही इस संकल्प की वास्तविक कसौटी होगी।

आज का सही प्रयास कल के मजबूत समाज का आधार बनेगा

(बच्चे उपदेशों या नसीहतों से कम, बल्कि माता-पिता के दैनिक कार्यों और व्यवहार से अधिक सीखते हैं)

बच्चों की परवरिश महज उन्हें खाना खिलाने, कपड़े पहनाने या अच्छे स्कूल भेजने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उनकी आत्मा और व्यक्तित्व की गहन सिंचाई का एक व्यापक कार्य है। बच्चा जन्म के समय एक कोरे कागज़ की भाँति होता है, जिस पर माता-पिता, परिवार और आसपास का माहौल जो भी चित्र या संदेश अंकित कर देता है, वह जीवन भर उसके चरित्र में विद्यमान रहता है और उसके निर्णयों को प्रभावित करता रहता है। इसलिए, परवरिश एक ऐसी कला है जो न केवल बच्चे को मज़बूत बनाती है, बल्कि पूरे समाज की नींव को भी दृढ़ करती है। आइए, परवरिश के कुछ महत्वपूर्ण सूत्रों पर विस्तार से विचार करें।

हौसला बढ़ाना और आत्मविश्वास का निर्माण,,,

जिस बच्चे की छोटी-छोटी योग्यताओं और प्रयासों की सराहना की जाती है, उसके अंदर स्वाभाविक रूप से आत्मविश्वास का बीज अंकुरित होता है। उदाहरण के लिए, अगर बच्चा पहली बार साइकिल चलाने की कोशिश करे और गिर जाए, तो माता-पिता कहें, ₹बहुत अच्छा प्रयास किया, अगली बार ज़रूर सफ़ल होगे,₹ तो वह हार मानने के बजाय और मेहनत करेगा। ऐसा बच्चा जीवन की कठिन चुनौतियों जैसे परीक्षा में असफ़लता या नौकरी में रुकावट,से घबराता नहीं, बल्कि उनका डटकर सामना करता है और सफ़लता प्राप्त करता है। इसके विपरीत, लगातार उपेक्षा से बच्चा असुरक्षित और हीनभावी हो जाता है।

नफ़रत बनाम मोहब्बत,,,

सकारात्मक माहौल का महत्व,,,

अगर बच्चे को हर समय आलोचना, उपहास या गुस्से का सामना करना पड़े, जैसे ₹तू हमेशा फेल ही होगा₹ कहकर ताने मारना, तो वह धीरे-धीरे कायर, विद्रोही या झगड़ालू स्वभाव का हो जाता है। वह या तो खुद को बंद कर लेता है या आक्रामक होकर दूसरों पर हमला करता है। लेकिन जिस घर में प्रेम, दया और समझ का वातावरण हो, जहाँ गलतियों पर मारने के बजाय समझाया जाए और सफ़लताओं पर गले लगाया जाए, वहाँ बच्चा दूसरों के प्रति करुणा और सम्मान की भावना सीखता है। वह बड़ा होकर एक संवेदनशील और सहयोगी व्यक्ति बनता है, जो समाज में शांति और एकता का प्रतीक होता है।

ईमानदारी और न्याय चरित्र निर्माण की आधारशिला,,,

माता-पिता का चरित्र ही बच्चे का पहला और सबसे बड़ा स्कूल होता है। अगर घर में सच्चाई की शिक्षा दी जाए, जैसे छोटी चोरी या झूठ बोलने पर सजा न देकर सही रास्ता दिखाया जाए, और बच्चे के साथ निष्पक्ष व्यवहार हो, तो वह स्वाभाविक रूप से ईमानदार और न्यायप्रिय बनता है। उदाहरणस्वरूप, अगर भाई-बहनों में भेदभाव न हो और हर निर्णय तर्कसंगत हो, तो बच्चा समाज का एक न्यायपूर्ण और विश्वसनीय नागरिक बनकर उभरता है। यह गुण उसे उत्कृष्ट समाज का निर्माण करने में सक्षम बनाता है।

सख़्ती के प्रभाव, और हिंसा का उल्टा असर,,

मारपीट और कठोर सज़ा जैसी सख़्ती बच्चे के व्यक्तित्व को सुधारने के बजाय स्थायी रूप से बिगाड़ देती है। शोध बताते हैं कि ऐसी हिंसा से बच्चा आज्ञाकारी होने के बजाय ज़िद्दी, छलपूर्ण और झूठ बोलने वाला हो जाता है, क्योंकि वह डर से बचने के लिए छिप जाता है। इसके बजाय, शांतिपूर्ण अनुशासन जैसे नियमों की व्याख्या और परिणाम बताना बच्चे को ज़िम्मेदार बनाता है। लंबे समय में, हिंसा पीड़ित बच्चे अवसाद या आक्रामकता के शिकार हो सकते हैं, स्वयं को आदर्श बनाएँ।

अंत में, हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि बच्चे उपदेशों या नसीहतों से कम, बल्कि माता-पिता के दैनिक कार्यों और व्यवहार से अधिक सीखते हैं। अगर हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे नैतिक मूल्यों से युक्त, आत्मविश्वासी और सफल इंसान बनें, तो हमें सबसे पहले ख़ुद को उनके लिए एक जीवंत उदाहरण (रोल मॉडल) बनाना होगा। आज का सही प्रयास कल के मजबूत समाज का आधार बनेगा।

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह

चौरसिया समाज का भव्य होली मिलन एवं सामाजिक सम्मेलन संपन्न

देव (जिला औरंगाबाद), 1 मार्च 2026 :

चौरसिया कल्याण समिति, गया जी के तत्वावधान में देव में भव्य होली मिलन समारोह एवं सामाजिक सम्मेलन का आयोजन उत्साह एवं गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ राष्ट्रहित एवं समाजहित के लिए समर्पित मुख्य अतिथि श्री रमेश लक्खू लाल चौरसिया एवं डॉ. विक्रम चौरसिया द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता समिति के अध्यक्ष अनुज कुमार चौरसिया ने की, जबकि सफल संचालन एवं नेतृत्व युवा अध्यक्ष त्रिपुरारी कुमार चौरसिया द्वारा किया गया। सम्मेलन में समाज की एकता, शिक्षा के विस्तार, सामाजिक जागरूकता तथा राजनीतिक सहभागिता को सशक्त बनाने पर विशेष बल दिया गया।

अपने संबोधन में डॉ. चौरसिया ने कहा कि किसी भी समाज के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा, संगठन एवं राजनीतिक भागीदारी अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि जो राजनीतिक दल समाज को सम्मान देगा, समाज भी उसका समर्थन करेगा। साथ ही चौरसिया समाज से भविष्य में सांसद एवं मंत्री स्तर का नेतृत्व तैयार करना समय की प्रमुख आवश्यकता है।

कार्यक्रम में डॉ. अनुपम चौरसिया, डॉ. जयप्रकाश चौरसिया, प्रमंडल अध्यक्ष मनोहर लाल चौरसिया, शिक्षक शशि भूषण चौरसिया, जिला महिला अध्यक्ष श्रीमती रिंकी चौरसिया, दीपक चौरसिया, शिक्षिका श्रीमती सरिता चौरसिया, जिला सलाहकार चंद्रशेखर चौरसिया, डॉ. सियाराम चौरसिया, सुबोध चौरसिया, पंकज चौरसिया, सुलेखा चौरसिया, बरखा चौरसिया एवं संजू चौरसिया , रोहित चौरसिया सहित बड़ी संख्या में समाज के गणमान्य लोग, महिला प्रतिनिधि एवं युवा उपस्थित रहे। आयोजन की सफलता में युवा अध्यक्ष त्रिपुरारी कुमार चौरसिया व अनुज चौरसिया की महत्वपूर्ण भूमिका रही, जिसमें सुश्री अंकिता चौरसिया का निरंतर सहयोग विशेष रूप से सराहनीय रहा। नाग देवता एवं पान संस्कृति की प्रतीकात्मक झलकियों से सुसज्जित इस आयोजन ने सामाजिक एकता, पारंपरिक गौरव एवं आपसी भाईचारे को नई मजबूती प्रदान की। सम्मेलन को सामाजिक जागरूकता एवं संगठन सुदृढ़ीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल के रूप में सराहा गया।

होली पर मातम, बिनावर क्षेत्र में बिलहैत रोड पर दो बाइको की भिड़ंत एक महिला की मौत- पति घायल, बाइक चालक मौके से फरार

संवाददाता: शिवेंद्र यादव

बिनावर: जनपद बदायूं के थाना बिनावर क्षेत्र में दो बाईकों की भिड़ंत में मायके में अपनी मां राजेश्वरी की गमी की होली में शामिल होने जा रही एक महिला की मौके पर ही मौत जबकि पति उदयवीर सिंह घायल हो गए, अपाचे बाइक चालक बाइक को छोड़कर फरार, सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची पुलिस ने महिला को एंबुलेंस द्वारा जिला अस्पताल भेजा।

यहां आपको बताते चले घटना थाना बिनावर क्षेत्र के बिलहैत रोड पर स्थित गौशाला के निकट की है। उदयवीर सिंह व उनकी पत्नी गुड्डी देवी 45 वर्षीय निवासी पुरोहित खेड़ा थाना बिसौली अपने घर से टीवीएस बाइक द्वारा अपने मायके मे अपनी मां राजेश्वरी देवी की गमी की होली में थाना बिनावर क्षेत्र के गांव फतेहपुर जा रहे थे। तभी एक अपाचे बाइक संख्या यूपी 24 बीके 5158 तीव्र गति से बिनावर की ओर से आ रही थी जिसने आगे चल रही दूसरी बाइक में टक्कर मार दी। जिससे पति-पत्नी दोनों बाइक सहित रोड पर गिर गए, अपाचे बाइक की रफ्तार इतनी तेज थी कि दूसरी बाइक पर सवार महिला गुड्डी देवी की मौके पर ही मौत हो गई। इस दौरान अपाचे बाइक चालक मौका पाकर बाइक छोड़कर फरार हो गया। घटना की सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची थाना बिनावर पुलिस ने महिला को एंबुलेंस द्वारा जिला अस्पताल भेजा जहां डॉक्टरों ने महिला को मृत घोषित कर दिया। सूत्रों द्वारा मिली जानकारी से पता चला है कि बाइक थाना मूसाझाग क्षेत्र के गांव मौसमपुर के निखिल पुत्र हरविंदर उर्फ सकटू की बताई जा रही है।

अद्भुत व परम रसमयी है महारास लीला : महामंडलेश्वर स्वामी भास्करानंद महाराज

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन ।कालीदह क्षेत्र स्थित अखण्ड दया धाम में मंगलायतन सेवा ट्रस्ट के द्वारा होली के पावन अवसर पर चल रहे सप्त दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा सप्ताह ज्ञान यज्ञ महोत्सव में व्यासपीठ से महामंडलेश्वर स्वामी भास्करानंद महाराज ने देश के विभिन्न प्रांतों से आए समस्त भक्तों-श्रद्धालुओं को महारास, मथुरा गमन, कंस वध एवं भगवान श्रीकृष्ण और रुक्मणि के विवाह का प्रसंग श्रवण कराया।

पूज्य महाराजश्री ने महारास लीला का प्रसंग श्रवण कराते हुए कहा कि महारास लीला भगवान श्रीकृष्ण की एक अद्भुत व परम रसमयी लीला है ।जिसे उन्होंने असंख्य ब्रजगोपियों के हृदय की अभिलाषा को पूर्ण करने लिए व अभिमानी कामदेव के अभिमान को नष्ट करने के लिए श्रीधाम वृन्दावन के यमुना तट पर शरद पूर्णिमा की रात्रि को किया था ।जिसमें उन्होंने अनेकों रूपों में अपनी बांसुरी बजाकर संपूर्ण विश्व को ब्रजमंडल की ओर आकर्षित किया ।लीला पुरुषोत्तम भगवान श्रीकृष्ण की महारास लीला के दर्शनों के लिए समस्त देवी-देवताओं के साथ भगवान शिव भी ब्रज गोपी का स्वरूप धारण कर श्रीधाम वृन्दावन पधारे थे।

श्रद्धेय भास्करानंद महाराज ने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण की महारास में सम्मिलित ब्रजगोपियां कोई साधारण स्त्रियां नहीं थी ।वो पूर्व जन्म के महान तपस्वी ऋषि-मुनि थे ।जिन्होंने भगवान श्रीकृष्ण को अपने पति के रूप में पाने के लिए अनन्त युगों तक कठोर तपस्या की थी ।इसीलिए ब्रजगोपियां भी भगवान श्रीकृष्ण के समान ही परम आनंदमयी व चिन्मयी थीं।

महोत्सव में पधारे सन्त प्रवर स्वामी सुबोधानंद महाराज ने कहा कि अखण्ड दया धाम के संस्थापकाध्यक्ष महामंडलेश्वर स्वामी भास्करानंद महाराज समस्त धर्म ग्रंथों के परम विद्वान व अत्यंत सहज, सरल और उदार संत हैं ।वे पूज्य अखंडानंद सरस्वती महाराज के परम कृपापात्र हैं और उन्हीं की सदप्रेरणा से देश-विदेश में सनातन धर्म व भारतीय वैदिक संस्कृति का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं ।साथ ही वे गौ-सेवा, संत-ब्रजवासी सेवा, वैदिक गुरुकुल, अन्न क्षेत्र व छात्रावास आदि अनेकानेक सेवा प्रकल्प समूचे देश में संचालित कर रहे हैं ।इसके अलावा हरिद्वार में भी शीघ्रातिशीघ्र अखण्ड दया धाम आश्रम की स्थापना उनके निर्देशन में पूर्ण होने जा रही है, जो कि बहुत ही प्रशंसनीय कार्य है।

इस अवसर पर ब्रज सेवा संस्थान की ओर से

प्रख्यात साहित्यकार रूपी रत्न डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने महामंडलेश्वर स्वामी भास्करानंद महाराज का उनके द्वारा धर्म व अध्यात्म के क्षेत्र में किए गए अविस्मरणीय कार्य के के लिए सम्मानित किया।

इस अवसर पर भगवान श्रीकृष्ण और रुक्मणि विवाह की अत्यंत दिव्य व भव्य झांकी सजाई गई ।साथ ही विवाह से संबंधित बधाईयों का संगीत की मृदुल स्वर लहरियों के मध्य गायन किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से साध्वी कृष्णानंद महाराज, आयोजन की मुख्य आयोजिक श्रीमती लीलावती-तुकाराम दोटे, डॉ. राधाकांत शर्मा आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

उत्कृष्ट लेखक डॉ. विजय गर्ग को प्रतिष्ठित सुरजीत पतर पुरस्कार से किया गया सम्मानित

परिवहन विशेष न्यूज। साहित्यिक और कलात्मक क्षेत्र में अपना बहुमूल्य योगदान देने वाले उत्कृष्ट लेखक डॉ. विजय गर्ग को लुधियाना में आयोजित एक प्रभावशाली कार्यक्रम के दौरान प्रतिष्ठित सुरजीत पतर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह सम्मान समारोह इडियट क्लब पंजाब (जस्पल भट्टी अवार्ड) द्वारा आयोजित किया गया था। लेखनी के क्षेत्र में नाम कमाए हुए लोगों को विशेष रूप से साहित्यिक पुरस्कार दिया जाता है। डॉ विजय गर्ग को यह पुरस्कार उनकी उत्कृष्ट साहित्यिक कृतियों के लिए दिया गया है। इस आयोजन के दौरान विभिन्न कलाओं से जुड़े 10 प्रमुख कलाकारों को उनकी उपलब्धियों के लिए पुरस्कार प्रदान किया गया। यह सम्मान प्राप्त करने के बाद डॉ. विजय गर्ग ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यह उनके लिए बहुत सम्मान की बात है कि उन्हें सुरजीत पतर जी जैसे महान शायर के नाम से पुरस्कार मिला। स्वर्गीय जसपाल भट्टी की याद में सक्रिय, मुखर याद क्लब पंजाब बश हर साल विभिन्न क्षेत्रों में समाज को मार्गदर्शन देने वाले कलाकारों और लेखकों को प्रोत्साहित करने के लिए इस कार्यक्रम का आयोजन करता है। इस बार भी यह कार्यक्रम कला प्रेमियों के लिए आकर्षण का केंद्र रहा है।

डिजिटल भारत, सुरक्षित होली: रौशन कुमार का संदेश

नईदिल्ली: भाजपा युवा मोर्चा (दिल्ली प्रदेश) के उपाध्यक्ष रौशन कुमार ने समस्त देशवासियों को होली की हार्दिक बधाई दी है। उन्होंने अपने संदेश में कहा कि यह पर्व आपसी प्रेम और भाईचारे का प्रतीक है। आज के 'नए युग' में हमें अपनी परंपराओं को डिजिटल इंडिया की शक्ति के साथ जोड़कर आगे बढ़ना चाहिए। रौशन कुमार ने युवाओं से अपील की कि वे तकनीक का उपयोग सकारात्मकता फैलाने और राष्ट्र निर्माण के संकल्प के साथ होली मनाने के लिए करें। "रंगों का यह उत्सव आपके जीवन में डिजिटल प्रगति और खुशहाली लेकर आए।" — रौशन कुमार

नया बीज बिल - 2026: किसानों के हक और बीज की क्वालिटी के लिए नई दिशा।

-सुनील कुमार महला

भारत दुनिया के खेती-बाड़ी वाले देशों में से एक है। यह कहना गलत नहीं होगा कि देश की एक बड़ी आबादी अभी भी सीधे या अप्रत्यक्ष रूप से खेती पर निर्भर है। अनुकूल मौसम, उपजाऊ मिट्टी और अलग-अलग भौगोलिक हालात कई तरह की फसलों की खेती के लिए सही हैं। गेहूं, चावल, गन्ना, दालें, तिलहन, कपास और मसाले जैसी फसलें न सिर्फ देश की खाने की ज़रूरतों को पूरा करती हैं, बल्कि एक्सपोर्ट के ज़रिए विदेशी मुद्रा कमाने में भी अहम भूमिका निभाती हैं। खेती-बाड़ी का सेक्टर ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ है और लाखों लोगों को रोज़गार देता है। इसके अलावा, पशुपालन, डेयरी फार्मिंग, मछली पालन और बागवानी जैसे सहायक सेक्टर किसानों की इनकम बढ़ाने में मददगार साबित हो रहे हैं। समय-समय पर लागू की गई सरकारी योजनाएं और मॉडर्न टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल खेती को ज़्यादा प्रोडक्टिव, फायदेमंद और टिकाऊ बनाने में मदद कर रहा है। इस तरह, खेती न सिर्फ रोज़ी-रोटी का ज़रिया है, बल्कि भारत के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक ताने-बाने का एक अहम हिस्सा भी है।

इस संदर्भ में, भारत सरकार एक नया सीड्स बिल, 2026 लाने की तैयारी कर रही है, जिसका मकसद एग्रीकल्चर सेक्टर में बड़े सुधार लाना है। यह पुराने सीड्स एक्ट, 1966 की जगह लेगा। अभी, सीड इंडस्ट्री में टेक्नोलॉजी में तरक्की और मल्टीनेशनल कंपनियों के बढ़ते असर की वजह से, पुराना कानून काफी नहीं माना जा रहा है। सरकार का मकसद किसानों को मजबूत कानूनी सुरक्षा देना, सीड मार्केट में ट्रांसपेरेंसी लाना और कॉर्पोरेट कंपनियों की मनमानी पर असरदार कंट्रोल करना है। कृषि मंत्रालय ने किसान संगठनों, सीड इंडस्ट्री और दूसरे स्टेकहोल्डर्स से इनपुट लेने के बाद इस बिल का ड्राफ्ट तैयार किया है। कैबिनेट की मंज़ूरी के बाद, इसे पार्लियामेंट के मौजूदा सेशन में पेश करने और जल्द से जल्द पास करने का प्लान है।

नए कानून का बैकग्राउंड 2015-16 के बीटी कॉटन विवाद से जुड़ा है। जैसा कि पाठक जानते हैं, रॉयल्टी को लेकर अमेरिकी कंपनी मोनसेंटो और भारतीय सीड कंपनियों के बीच एक गंभीर विवाद खड़ा हो गया था। मोनसेंटो अपनी टेक्नोलॉजी के लिए बहुत ज़्यादा रॉयल्टी ले रही थी, जिससे सीड की कीमतें बढ़ गईं और किसानों पर एक्स्ट्रा फाइनेंशियल बोझ पड़ा। भारत सरकार ने बीटी कॉटन के बीजों के लिए एक सीलिंग प्राइस और रॉयल्टी में कमी का ऑर्डर दिया। कंपनी ने इस फैसले को दिल्ली हाई कोर्ट में चैलेंज किया, और मामला सुप्रीम कोर्ट चला गया। इस कानूनी लड़ाई से पता चला कि पुराना कानून मल्टीनेशनल कंपनियों की पावर को कंट्रोल करने और बीज की कीमतों और क्वालिटी पर सरकार के अधिकार को साफ करने में कमजोर था। असल में, इसी स्थिति ने नए सीड्स बिल का आधार बनाया।

प्रस्तावित सीड्स बिल 2026 सभी बीजों का सरकारी रजिस्ट्रेशन ज़रूरी बनाता है, और बिना सरकारी मंज़ूरी के कोई भी बीज बाज़ार में नहीं बेचा जाएगा। पुराने कानून के तहत, कंपनियां अपने बीजों को 'असली लेबल वाली' कैटेगरी में बिना किसी सख्त रजिस्ट्रेशन ज़रूरत के बेच सकती थीं, लेकिन अब यह तरीका खत्म कर दिया जाएगा। नया कानून बीजों के लिए साफ क्वालिटी स्टैंडर्ड तय करेगा। अगर कोई बीज खराब निकलता है और फसलों को नुकसान पहुंचाता है, तो संबंधित कंपनी को किसानों को हर्जाना देना होगा। यह कहना सही होगा कि इससे किसानों को सीधे कानूनी अधिकार मिलेंगे।

इसके अलावा, बिल में एक डिजिटल ट्रैकिंग सिस्टम और एक नेशनल सीड रजिस्टर का भी प्रावधान है। इससे यह पक्का होगा कि हर बीज की वैरायटी, बनाने वाले और मालिक की जानकारी सरकारी रिकॉर्ड में सुरक्षित रहे। इससे नकली और घटिया बीजों की बिक्री रुकेगी और बीज की चोरी और गुमराह करने वाले दावों पर कंट्रोल होगा। बिना रजिस्टर्ड बीज बेचने, क्वालिटी स्टैंडर्ड का उल्लंघन करने या गलत जानकारी देने वाली कंपनियों के लिए सख्त सज़ा और भारी जुर्माने का भी प्रावधान किया गया है। बीज की कीमत और क्वालिटी कंट्रोल में सरकार की भूमिका को और मज़बूत और साफ़ किया जाएगा, जिससे बड़ी कंपनियाँ मनमानी रॉयल्टी या बहुत ज़्यादा कीमत वसूल नहीं कर पाएँगी।

असल में, सरकार ने यह भी साफ़ किया है कि किसानों को पारंपरिक बीजों के लिए बिना किसी रजिस्ट्रेशन की ज़रूरत के अपने बीज बदलने और बेचने की आज़ादी बनी रहेगी। कुल मिलाकर, नया सीड्स बिल 2026 एक ज़रूरी और बड़ा कानूनी सुधार है जो किसानों को मुआवज़ा, बीज बाज़ार में ट्रांसपेरेंसी, क्वालिटी एश्योरेंस और कॉर्पोरेट कंट्रोल पर रोक का अधिकार पक्का करता है।

ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियमों और कार्बन क्रेडिट के बीच नीतिगत अंतर

● विजय गर्ग

ठोस अपशिष्ट प्रबंधन (एसडब्ल्यूएम) नियमों के अनुसार नगर पालिकाओं को स्रोत पर पृथक्करण, पुनर्चक्रण, कम्पोस्टिंग, बायोमेथनेशन और अवशिष्ट अपशिष्ट का वैज्ञानिक निपटान सुनिश्चित करना आवश्यक है। इन उपायों का उद्देश्य लैंडफिल के उपयोग को न्यूनतम करना और मीथेन उत्सर्जन को कम करना है — एक शक्तिशाली ग्रीनहाउस गैस।

ठोस अपशिष्ट प्रबंधन और जलवायु शमन नीतिगत क्षेत्र हैं। वैज्ञानिक अपशिष्ट प्रसंस्करण लैंडफिल से मीथेन उत्सर्जन को कम करता है, संसाधनों का संरक्षण करता है, तथा परिपत्र अर्थव्यवस्था लक्ष्यों का समर्थन करता है। भारत ने ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 और उसके बाद के अद्यतनों के माध्यम से अपने अपशिष्ट शासन को मजबूत किया है, साथ ही ऊर्जा दक्षता ब्यूरो द्वारा प्रशासित कार्बन बाजार ढांचे के तहत बाजार-आधारित जलवायु तंत्र को बढ़ावा दिया है। साझा पर्यावरणीय उद्देश्यों के बावजूद, अपशिष्ट प्रबंधन अनुपालन आवश्यकताओं और कार्बन क्रेडिट पात्रता के बीच नीतिगत अंतर बना हुआ है। यह अंतर शहरी स्थानीय निकायों और निजी संचालकों के लिए नियामक भ्रम, वित्तीय अनिश्चितता और कार्यान्वयन संबंधी चुनौतियां पैदा करता है।

नियामक ढांचा और जलवायु वित्त संबंध

ठोस अपशिष्ट प्रबंधन (एसडब्ल्यूएम) नियमों के अनुसार नगर पालिकाओं को स्रोत पर पृथक्करण, पुनर्चक्रण, कम्पोस्टिंग, बायोमेथनेशन और अवशिष्ट अपशिष्ट का वैज्ञानिक निपटान सुनिश्चित करना आवश्यक है। इन उपायों का उद्देश्य लैंडफिल के उपयोग को न्यूनतम करना और मीथेन उत्सर्जन को कम करना है — एक शक्तिशाली ग्रीनहाउस गैस।

इन नियमों के समानांतर, भारत का कार्बन बाजार ढांचा उत्सर्जन-कमी परियोजनाओं को कार्बन क्रेडिट अर्जित करने की अनुमति देता है। सिद्धांततः, अपशिष्ट प्रबंधन में सुधार से जैव-विघटनशील कचरे को लैंडफिल से हटाकर तथा ऊर्जा उपयोग के लिए मीथेन का संचय करके मापनीय जलवायु लाभ उत्पन्न हो सकते हैं।

हालांकि, कार्बन क्रेडिट प्रणालियां अतिरिक्तता के सिद्धांत पर काम करती हैं, जिसका अर्थ है कि उत्सर्जन में कमी कानूनी रूप से अनिवार्य कार्यों से अधिक होनी चाहिए।

कोर पॉलिसी गैपः अनुपालन बनाम. अतिरिक्तता

यह केंद्रीय मुद्दा इसलिए उत्पन्न होता है क्योंकि अपशिष्ट प्रबंधन में उत्सर्जन को कम करने वाली कई गतिविधियां पहले से ही एसडब्ल्यूएम नियमों के तहत अनिवार्य हैं।

प्रमुख विरोधाभासों में शामिल हैंः

अनिवार्य कार्रवाईः पृथक्करण, कम्पोस्टिंग, बायोमेथनेशन और लैंडफिल डायवर्सन कानूनी दायित्व हैं।

कार्बन क्रेडिट नियमः कानून द्वारा अपेक्षित कार्यों के लिए क्रेडिट जारी नहीं किया जाता है।

नीति संदेश संघर्षः एसडब्ल्यूएम दिशानिर्देश कार्बन क्रेडिट उत्पादन को प्रोत्साहित करते हैं, फिर भी अनुपालन गतिविधियां अयोग्य हो सकती हैं।

यह विरोधाभास कार्बन राजस्व धाराओं की अपेक्षा करने वाले नगरपालिका प्राधिकारियों के लिए अनिश्चितता पैदा करता है।

नीतिगत अंतर से उभरते प्रमुख मुद्दे

1।वित्तीय व्यवहार्यता चुनौतियां

नगरपालिका निकाय अक्सर अपशिष्ट प्रसंस्करण बुनियादी ढांचे का समर्थन करने के लिए कार्बन क्रेडिट राजस्व पर निर्भर रहते हैं। यदि अनुपालन गतिविधियां क्रेडिट अर्जित नहीं कर पातीं, तो वित्तपोषण अंतराल बढ़ जाता है।

2। शीघ्र अनुपालन के लिए प्रोत्साहन नहीं

जो शहर सक्रिय रूप से अनुपालन करते हैं, वे कार्बन राजस्व के अवसरों को खो सकते हैं, जबकि पिछड़ने वाले क्षेत्र बाद में अनुपालन से परे परियोजनाओं के माध्यम से लाभान्वित हो सकते हैं।

3।निजी क्षेत्र में संकोच

अपशिष्ट से ऊर्जा और बायोमेथनेशन परियोजनाओं के लिए महत्वपूर्ण निवेश की आवश्यकता होती है। अस्पष्ट ऋण पात्रता निजी भागीदारी और सार्वजनिक-निजी साझेदारी को हतोत्साहित करती है।

4।पात्रता मानदंडों में अस्पष्टता

इस बात को लेकर पर्याप्त स्पष्टता नहीं है कि कौन सी अपशिष्ट परियोजनाएं अतिरिक्त जलवायु शमन कार्रवाई के रूप में योग्य हैं।

5। प्रशासनिक और निगरानी जटिलता

अपशिष्ट ट्रैकिंग, मीथेन कमी मापन और कार्बन सत्यापन प्रणालियों को एकीकृत करना तकनीकी और संस्थागत रूप से चुनौतीपूर्ण बना हुआ है।

6। पर्यावरणीय अखंडता के लिए जोखिम

यदि अनिवार्य कार्रवाइयों के लिए क्रेडिट जारी किया जाता है, तो कार्बन बाजार की विश्वसनीयता से समझौता हो सकता है।

निरंतर अवसर के क्षेत्र

नीतिगत अंतराल के बावजूद, कार्बन क्रेडिट उत्पन्न करना कुछ परिस्थितियों में संभव है

नियामक मानकों से अधिक परियोजनाएं।

आधारभूत अनुपालन से परे मीथेन कैप्चर और ऊर्जा पुनर्प्राप्ति।

उन्नत अपशिष्ट-से-ऊर्जा प्रौद्योगिकियां।

कार्यान्वयन में वित्तीय या तकनीकी बाधाओं का प्रदर्शन।

स्वैच्छिक कार्बन बाजारों के माध्यम से एकत्रित परियोजनाएं।

नीति और शासन चुनौतियां

यह अंतर पर्यावरणीय विनियमन और जलवायु वित्त ढांचे के बीच व्यापक समन्वय मुद्दे को दर्शाता है। अपशिष्ट नियम सार्वजनिक स्वास्थ्य और पर्यावरण संरक्षण पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जबकि कार्बन बाजार मापनीय उत्सर्जन में कमी पर जोर देते हैं। सामंजस्य के बिना, दोनों प्रणालियों में कम प्रदर्शन का खतरा है।

जलवायु वित्त सहायता के बिना शहरी स्थानीय निकायों को अनुपालन आवश्यकताओं को पूरा करने में कठिनाई हो सकती है, तथा नीतिगत अस्पष्टता के कारण निवेशक सतर्क रहते हैं।

अंतर को पाटने के लिए सिफारिशें

असंगतियों को दूर करने और जलवायु परिणामों को मजबूत करने के लिए, नीति निर्माताओं को निम्नलिखित पर विचार करना चाहिए

1। अनुपालन गतिविधियों को अतिरिक्त कटौती से अलग करने वाली स्पष्ट पात्रता दिशानिर्देश।

2। भारतीय नियामक वास्तविकताओं के अनुरूप अपशिष्ट-क्षेत्र कार्बन पद्धतियां।

3। अनुपालन के लिए प्रोत्साहन, जैसे ग्रीन क्रेडिट या प्रदर्शन-आधारित अनुदान।

4। कार्बन लेखांकन प्लेटफार्मों के साथ अपशिष्ट डेटा प्रणालियों का डिजिटल एकीकरण।

5। कार्बन बाजार में भागीदारी में स्थानीय सरकारों के लिए क्षमता निर्माण।

6। पर्यावरण विनियमों और जलवायु वित्त ढांचे के बीच नीतिगत सामंजस्य।

निष्कर्ष

ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियमों और कार्बन क्रेडिट तंत्र के बीच नीतिगत अंतर, नियामक अनुपालन को बाजार-आधारित जलवायु प्रोत्साहनों के साथ संरेखित करने की जटिलता को उजागर करता है। यद्यपि अपशिष्ट प्रसंस्करण पर्यावरण संरक्षण और मीथेन न्यूनीकरण के लिए आवश्यक है, लेकिन कार्बन बाजार केवल कानूनी आवश्यकताओं से परे अतिरिक्त उत्सर्जन में कमी को ही पुरस्कृत करता है।

नीतिगत स्पष्टता, वित्तीय नवाचार और संस्थागत समन्वय के माध्यम से इस अंतर का समाधान करने से जलवायु वित्त को बढ़ावा मिल सकता है, अपशिष्ट बुनियादी ढांचे को मजबूत किया जा सकता है, तथा भारत की गोलाकार अर्थव्यवस्था और जलवायु प्रतिबद्धताओं में प्रगति हो सकती है।

डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाशास्त्री स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलौट पंजाब

ग्लोबल माइंड हेल्थ रिपोर्ट 2025- भारत में युवाओं के मेंटल हेल्थ को लेकर चौंकाने वाला आकड़ा आया - 84 देशों की स्टडी में भारतीय युवा 60वें स्थान पर,मेंटल हेल्थ को लेकर बढ़ी चिंता-समग्र विश्लेषण

डिजिटल युग,कृत्रिम बुद्धिमत्ता और युवा मानसिक स्वास्थ्य- वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारत की स्थिति का समग्र विश्लेषण

भारतीय युवाओं के मेंटल हेल्थ को लेकर बढ़ी चिंता- प्रश्न तकनीक बनाम मानव का नहीं, बल्कि संतुलन का है,डिजिटल युग में रहकर डिजिटल अनुशासन विकसित करना ही समाधान है -एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर वर्तमान डिजिटल युग में प्रौद्योगिकी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने मानव जीवन को अभूतपूर्व गति, सुविधा और वैश्विक संपर्क प्रदान किया है।ओपनएआई, गूगल और माइक्रोसॉफ्ट जैसी कंपनियों द्वारा विकसित एआई उपकरणों ने शिक्षा,स्वास्थ्य, वित्त, प्रशासन और व्यक्तिगत जीवन के निर्णयों तक में गहरी पैठ बना ली है।भारत जैसे युवा देश में यह प्रभाव और भी व्यापक है,जहाँ डिजिटल क्रांति ने स्मार्टफोन और इंटरनेट को जनसामान्य तक पहुँचा दिया है।किंतु इसी परिवर्तनशील परिदृश्य में एक गंभीर प्रश्न उभर रहा है,क्या अत्यधिक डिजिटल निर्भरता और शॉर्ट वीडियो संस्कृति हमारे युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर रही है ?मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह बताना चाहता हूं कि भारतीय चिंतन परंपरा में कहा गया है"अति सर्वत्र वर्जयेत।" यह केवल नैतिक उपदेश नहीं,बल्कि संतुलित जीवन का वैज्ञानिक सिद्धांत है।इसका भावार्थ है जब तकनीक, साधन से अधिक उद्देश्य बन जाती है, तब उसके दुष्प्रभाव स्पष्ट होने लगते हैं।हाल ही में 26 फरवरी 2026 को जर्मनी से जारी ग्लोबल माइंड हेल्थ रिपोर्ट 2025 ने इसी चिंता को तथ्यात्मक आधार दिया है।यह रिपोर्ट स्पेन लेबस के ग्लोबल माइंड प्रोजेक्ट के अंतर्गत तैयार की गई है। विश्व के 84 देशों के 10 लाख से अधिकप्रतिभागियों के डेटा पर आधारित इस अध्ययन में 78,093 भारतीयों को शामिल किया गया,जिनमें 29,594 प्रतिभागी 18-34 वर्ष आयु वर्ग के थे और 24,088 प्रतिभागी 55 वर्ष से अधिक आयु के थे। रिपोर्ट के अनुसार 18 से 34 वर्ष के भारतीय युवा मानसिक स्वास्थ्य के मानकों पर 84 देशों में 60वें स्थान पर हैं। उनका माइंड हेल्थ क्वोशेंट स्कोर मात्र 33 दर्ज किया गया, जबकि 55 वर्ष से अधिक आयु वर्ग का स्कोर 96 रहा और वे वैश्विक रैंकिंग में 49वें स्थान पर रहे। यह पीढ़ीगत अंतर केवल सांख्यिकीय नहीं,बल्कि सामाजिक संरचना में गहरे परिवर्तन का संकेत है।यहाँ यह उल्लेखनीय है कि भारत सरकार ने 2017 में मानसिक स्वास्थ्य देखभाल अधिनियम लागू किया था,जोमानसिक रोगियों के अधिकारों की रक्षा करता है। परंतु जमीनी स्तर पर जागरूकता और संसाधनों की कमी के कारण इसका प्रभाव सीमित रहा है। मनोचिकित्सकों की उपलब्धता प्रति लाख जनसंख्या के अनुपात में अत्यंत कम है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानकों की तुलना में भारत में मानसिक स्वास्थ्य पेशेवरों की संख्या अपर्याप्त है।भारत यदि इस चुनौती को गंभीरता से लेकर समग्र रणनीति अपनाता है, तो भविष्य में वैश्विक रैंकिंग में सुधार संभव है। मानसिक स्वास्थ्य केवल व्यक्तिगत सुख- शांति का विषय नहीं,बल्कि राष्ट्र की सामूहिक चेतना और प्रगति का आधार है। इसलिए 2025 की यह रिपोर्ट केवल आंकड़ा नहीं, बल्कि नीति-निर्माताओं, शिक्षकों, अभिभावकों और युवाओं,सभी के लिए एक साझा आह्वान है कि मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता दी जाए और स्वस्थ, संतुलित तथा सशक्त युवा पीढ़ी का सटीकता से निर्माण किया जाए।

साथियों बात अगर हम एमएचक्यू स्कोर को समझने की करें तो यह एक समग्र सूचकांक है,जो व्यक्ति की भावनात्मक स्थिरता,सामाजिक अनुकूलन, ध्यान क्षमता, आत्मनियंत्रण, तनाव से उबरने की क्षमता और जीवन प्रबंधन कौशल को मापता है।जब युवा वर्ग का स्कोर बुजुर्गों की तुलना में लगभग एक-तिहाई रह जाता है, तो यह स्पष्ट करता है कि नई पीढ़ी केवल चिंता या अवसाद से ही नहीं जूझ रही,बल्कि उसकी मूल मनोवैज्ञानिक क्षमताएँ भी कमजोर पड़ रही हैं।रिपोर्ट की प्रमुख वैज्ञानिक और संस्थापक ने स्पष्ट कहा है कि समस्या केवल डिप्रेशन या एंग्जायटी तक सीमित नहीं है;युवाओं में भावनाओं को नियंत्रित करने,

ध्यान केंद्रित रखने, स्थिर रिश्ते बनाने और तनाव से उबरने की आधारभूत क्षमता प्रभावित हो रही है।

साथियों बात अगर हम डिजिटल एक्सपोज़र इस गिरावट के प्रमुख कारणों में से एक माना गया है इसको समझने की करें तो,भारत में पहली बार स्मार्टफोन उपयोग की औसत आयु 16.5 वर्ष दर्ज की गई है।किशोरावस्थामस्तिष्क विकास का संवेदनशील चरण होता है,जहाँ न्यूरल नेटवर्क तेजी से विकसित होते हैं। ऐसे समय में निरंतर शॉर्ट वीडियो,रील्स और त्वरित डोपामिन आधारित कंटेंट मस्तिष्क को तत्काल संतुष्टि का आदी बना देता है।अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 98 हजार लोगों पर किए गए 71 अध्ययनों के विश्लेषण में पाया गया कि अत्यधिक शॉर्ट वीडियो देखने से ध्यान क्षमता घटती है, आत्मनियंत्रण कम होता है और तनाव व चिंता बढ़ सकती है। हर कुछ सेकंड में बदलता दृश्य और ध्वनि उत्तेजना मस्तिष्क की प्राकृतिक एकाग्रता प्रणाली को बाधित करती है, जिससे पढ़ाई, शोध, पुस्तक पठन और गहन चिंतन जैसे कार्य कठिन प्रतीत होने लगते हैं। भारत स्मार्टफोन एक्सपोज़र के मामले में 84 देशों में 71वें स्थान पर है, किंतु यह तथ्य भी ध्यान देने योग्य है कि इंटरनेट उपयोग करने वाले 18-34 आयु वर्ग के वैश्विक 41 प्रतिशत युवा गंभीर मानसिक स्वास्थ्य चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। यह संकेत देता है कि समस्या केवल भारत तक सीमित नहीं है; विकसित और विकासशील दोनों प्रकार के देशों के युवा इससे जूझ रहे हैं। उदाहरणस्वरूप, इस अध्ययन में घाना प्रथम स्थान पर रहा, जबकि विश्व हैप्पीनेस इंडेक्स में शीर्ष पर रहने वाला फिनलैंड 18–34 आयु वर्ग में 40वें स्थान पर रहा। इससे स्पष्ट है कि आर्थिक समृद्धि मानसिक स्वास्थ्य की बिलकुल गारंटी नहीं है।

साथियों बात अगर हम रिपोर्ट में खानपान को भी एक महत्वपूर्ण कारक माना गया है इसको समझने की करें तो,18-34 वर्ष के 44 प्रतिशत भारतीय युवा नियमित रूप से अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड का सेवन करते हैं,जबकि 55 वर्ष से अधिक आयु वर्ग में यह आंकड़ा केवल 11 प्रतिशत है। पिछले 15 वर्षों में भारत अल्ट्रा-प्रोसेस्ड खाद्य पदार्थों के लिए विश्व के सबसे तेजी से बढ़ते बाजारों में शामिल हुआ है।उच्च शर्करा,सोडियम और कृत्रिम तत्वों से भरपूर भोजन केवल मोटापा, मधुमेह और हृदय रोग ही नहीं बढ़ाते, बल्कि आंत-मस्तिष्क अक्ष को प्रभावित कर मानसिक असंतुलन की संभावना भी बढ़ाते हैं।वैज्ञानिक अध्ययनों में यह पाया गया है कि पोषण और मानसिक स्वास्थ्य के बीच सीधा संबंध है; संतुलित आहार भावनात्मक स्थिरता को बढ़ाता है। पारिवारिक जुड़ाव इस परिदृश्य में सुरक्षा कवच की भूमिका निभाता है। रिपोर्ट के अनुसार 18-34 आयु वर्ग के 64 प्रतिशत युवाओं ने स्वयं को परिवार के निकट बताया,जबकि 55 वर्ष से अधिक आयु वर्ग में यह आंकड़ा 78 प्रतिशत रहा। पारिवारिक करीबी के मामले में भारत दोनों आयु वर्गों में 28वें स्थान पर है। भारतीय समाज की पारंपरिक संयुक्त परिवार व्यवस्था,आध्यात्मिकता और सामुदायिक संस्कृति अभी भी मानसिक संतुलन बनाए रखने में सहायक है, किंतु नगरीकरण, प्रवासन और डिजिटल जीवन शैली के कारण इसमें भीगिरावट देखी जा रही है। जब सामाजिक समर्थन तंत्र कमजोर होता है, तो व्यक्ति का भावनात्मक प्रतिरोधक तंत्र भी कमजोर पड़ता है।

साथियों अब हमें यह समझना आवश्यक है कि डिजिटल प्रौद्योगिकी स्वयं समस्या नहीं है;उसका अनियंत्रित और असंतुलित उपयोग समस्या बनता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता शिक्षा में वैयक्तिकृत शिक्षण, स्वास्थ्य में रोग निदान, कृषि में उत्पादकता वृद्धि और प्रशासन में पारदर्शिता ला सकती है। किंतु यदि हर निर्णय, हर प्रश्न और हरजिज्ञासा का उत्तर केवल एआई से प्राप्त किया जाए, तो मानव मस्तिष्क की विश्लेषणात्मक औरसृजनात्मक क्षमता कुंठित हो सकती है। जब बच्चे और युवा बिना स्वयं विचार किए समाधान खोजने लगते हैं, तो उनका तार्किक कौशल और आत्मविश्वास प्रभावित हो सकता है। तकनीक सहायक बने, विकल्प नहीं,यह सिद्धांत अपनाना आवश्यक है।वैश्विक संदर्भ में देखा जाए तो विकसित देशों के युवा भी मानसिक स्वास्थ्य संकट से जूझ रहे हैं। आर्थिक प्रगति, प्रतिस्पर्धी शिक्षा प्रणाली, नौकरी का दबाव और सामाजिक तुलना ने युवाओं पर अदृश्य मानसिक बोझ डाला है। सोशल मीडिया पर आदर्श जीवनशैली का प्रदर्शन आत्मसम्मान को प्रभावित करता है। निरंतर तुलना की संस्कृति व्यक्ति को यह महसूस कराती है कि वह पर्याप्त नहीं है। इससे आत्ममूल्यांकन नकारात्मक होता है और चिंता बढ़ती है। इस संदर्भ में डिजिटल साक्षरता केवल तकनीकी ज्ञान तक सीमित नहीं,बल्कि भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक जागरूकता तक विस्तारित होनी चाहिए।

साथियों बात अगर हम भारत के लिए यह रिपोर्टचेतावनी के साथ अवसर भी प्रस्तुत करती है इसको समझने की करें तो, एक ओर युवा आबादी देश की जनसांख्यिकीय शक्ति है,दूसरी ओर यदि उनकी मानसिक सेहत कमजोर होती है तो उत्पादकता, नवाचार और सामाजिक स्थिरता प्रभावित हो सकती है। नीति-निर्माताओं को स्कूल स्तर पर मानसिक स्वास्थ्य शिक्षा, डिजिटल उपयोग की समय- सीमा, खेल-कूद और कला गतिविधियों को प्रोत्साहन, तथा पोषण संबंधी जागरूकता अभियानों को प्राथमिकता देनी चाहिए। परिवारों को भी संवाद, साझा समय और डिजिटल डिटॉक्स जैसे उपाय अपनाने होंगे।कानूनी दृष्टि से यह रिपोर्ट कोई औपचारिक सरकारी नीति दस्तावेज नहीं है,बल्कि शोध- आधारित सार्वजनिक रिपोर्ट है। इसकी वैज्ञानिक मान्यता पर विशेषज्ञों के बीच मतभेद हो सकते हैं; कुछ इसे व्यापक और उपयोगी डेटा-संग्रह मानते हैं, तो कुछ इसकी पद्धति पर प्रश्न उठाते हैं। फिर भी, इतने बड़े वैश्विक नमूने पर आधारित निष्कर्षों को पूरी तरह नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। नीति निर्माण में इसे संकेतक के रूप में लिया जा सकता है, न कि अंतिम सत्य के रूप में।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि प्रश्न तकनीक बनाम मानव का नहीं,बल्कि संतुलन का है। डिजिटल युग में रहकर डिजिटल अनुशासन विकसित करना ही समाधान है। यदि युवा वर्ग समय-प्रबंधन,आत्मनियंत्रण, नियमित व्यायाम, संतुलित आहार और पारिवारिक संवाद को प्राथमिकता दे,तो तकनीक उनके विकास का साधन बन सकती है। समाज, परिवार, शैक्षणिक संस्थान और सरकार सभी को मिलकर यह सुनिश्चित करना होगा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव बुद्धिमत्ता की पूरक बने, प्रतिस्थापक नहीं।"अति सर्वत्र वर्जयेत" का शाश्वत संदेश आज पहले से अधिक प्रासंगिक है। डिजिटल क्रांति मानव सभ्यता की उपलब्धि है, किंतु मानसिक संतुलन और मानवीय संबंध ही उसके स्थायी आधार हैं। यदि हम संतुलन, संयम और विवेक के साथ तकनीक का उपयोग करें, तो युवा पीढ़ी न केवल मानसिक रूप से सशक्त होगी, बल्कि वैश्विक प्रतिस्पर्धा में भी अग्रणी बनेगी। यही इस वैश्विक रिपोर्ट का मूल संदेश और भारत के लिए मार्गदर्शन है।

खामेनेई की शहादत: भारत के सच्चे मित्र का अंतिम सफर

- डॉ. प्रियंका सौरभ

ईरानी राज्य मीडिया की आधिकारिक घोषणा ने दुनिया हिला दी—सर्वोच्च नेता अयातुल्लाह अली खामेनेई 28 फरवरी 2026 को अमेरिका-इजरायल के हवाई हमलों में तेहरान में शहीद हो गए। सोशल मीडिया की वह पोस्ट सही साबित हुई—₹ख़ामेनेई का जाना एक युग का अंत है। भारत ने अपना एक सच्चा दोस्त खो दिया है ₹ खामेनेई जी को विनम्र श्रद्धांजलि। उनके नेतृत्व में ईरान ने पाकिस्तान के खिलाफ हमारा साथ दिया, कश्मीर मुद्दे पर संयुक्त राष्ट्र में भारत के पक्ष में वोट किया, ऊर्जा क्षेत्र में सुरक्षा प्रदान की और सस्ता तेल उपलब्ध कराया। आज ईरान संकट में डूबा है। भारत को अपनी स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए। वैश्विक तानाशाह अमेरिका को रोकना होगा—वेनेजुएला के बाद ईरान, आगे कौन होगा?

भारत-ईरान संबंध प्राचीन जड़ों वाले हैं। सिंधु घाटी सभ्यता और फारस साम्राज्य के व्यापार से लेकर आज का चाबहार बंदरगाह तक—यह मित्रता इतिहास की गवाह है। 1950 के दशक में गैर-संरेखित आंदोलन ने औपचारिक रूप दिया। 1979 की इस्लामी क्रांति के बाद उतार-चढ़ाव आए, लेकिन 1989 से खामेनेई के नेतृत्व ने स्थिरता लाई। कश्मीर पर उनका रुख अटल रहा। 1971, 1994 और 2017 के संयुक्त राष्ट्र मतदान में ईरान ने पाकिस्तान के प्रचार को नकारा, भारत का साथ दिया। जब अधिकांश मुस्लिम देश पाक के साथ थे, ईरान ने कहा—कश्मीर भारत का आंतरिक मामला। यह कूटनीतिक जीत थी।

पाकिस्तान के खिलाफ ईरान का समर्थन प्रत्यक्ष था। बलूचिस्तान सीमा विवादों में ईरान ने पाक को कड़ा संदेश दिया। अफगानिस्तान में तालिबान के खिलाफ भारत को सहयोग मिला। चाबहार बंदरगाह इसका प्रतीक बना। 2016 में प्रधानमंत्री मोदी की पहल से शुरू $500 मिलियन की यह परियोजना पाक के ग्वादर को चुनौती देती है। मध्य एशिया, अफगानिस्तान तक वैकल्पिक मार्ग खोलती है। 2024 तक भारत ने $370 मिलियन निवेश किया। 2025 में इसे भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक कॉरिडोर से जोड़ा गया। खामेनेई ने इसे व्यक्तिगत रूप से समर्थन दिया। ऊर्जा सहयोग भी ऐतिहासिक। 2005-2015 में ईरान भारत को 25 प्रतिशत क्रूड ऑयल सप्लाई करता था, बाजार से 20 प्रतिशत सस्ता। अमेरिकी प्रतिबंधों के बावजूद अनौपचारिक रुपया-तेल व्यापार से भारत ने $12 बिलियन बचत की। 2023 में द्विपक्षीय व्यापार $2.5 बिलियन पहुंचा। ईरान ने भारत से चावल, चाय, दवाइयां और इंजीनियरिंग सामान खरीदा। खामेनेई ने कहा था—भारत हमारा सांस्कृतिक भाई है।

ईरान का वर्तमान संकट गहरा है। अमेरिकी प्रतिबंधों से अर्थव्यवस्था ध्वस्त—मुद्रास्फीति 45 प्रतिशत, बेरोजगारी 15 प्रतिशत, GDP 12 प्रतिशत सिकुड़ी। परमाणु समझौता JCPOA (2015) विफल, इजरायल के साइबर हमले और हवाई कार्रवाई बढ़ी। हूती विद्रोहियों को समर्थन से लाल सागर में शिपिंग बाधित, वैश्विक व्यापार को नुकसान। आंतरिक स्तर पर महसा अमिनी आंदोलन (2022) से महिलाओं का गुस्सा भड़का। खामेनेई की शहादत के बाद उत्तराधिकार युद्ध शुरू। विशेषज्ञ परिषद तीन सदस्यीय अस्थायी परिषद बनाएगी। संभावित उत्तराधिकारी—मजलिस स्पीकर मोहम्मद बघर गलिबाफ या IRGC प्रमुख। लेकिन सैन्य तख्तापलट का खतरा। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने इसे ₹न्याय का दिन₹ कहा। इजरायल ने जश्न मनाया। यह एकतरफा तानाशाही है। वेनेजुएला का तेल संकट, सीरिया का विनाश—अब ईरान। अगला निशाना यमन या उत्तर कोरिया?

भारत ने संतुलित नीति अपनाई। शंघाई सहयोग संगठन (SCO) में ईरान को पूर्ण सदस्यता, क्वाड में अमेरिका से साझेदारी। इजरायल से $2.5 बिलियन रक्षा सौदे—ड्रोन, मिसाइल। लेकिन ईरान को कभी नहीं छोड़ा। 2025 BRICS शिखर में डी-डॉलराइजेशन और ऊर्जा सहयोग पर सहमति। विदेश मंत्रालय ने ₹क्षेत्रीय स्थिरता₹ पर नजर रखने की बात कही। चाबहार परियोजना जारी। लेकिन सोशल मीडिया का सवाल जायज—₹अमेरिका और इज़रायल की तानाशाही के कुछ तो बोलो मोदी जी, आप विश्वगुरु नहीं गुरुघंटाल हो ₹ मोदी सरकार की चुप्पी आलोचना का कारण बनी। G20 (2023) में ₹एक पृथ्वी, एक परिवार₹ का नारा दिया, लेकिन ईरान संकट पर मौन। अबू धाबी अब्राहम समझौते समर्थित, लेकिन ईरान अलग-थलग। यह संतुलन या कायरता?

भारत को क्या कदम उठाने चाहिए? पहला—चाबहार को प्राथमिकता। $500 मिलियन अतिरिक्त निवेश, अफगानिस्तान तक रेल और सड़कें। दूसरा—नए ईरानी नेतृत्व से तत्काल संपर्क। शोक सभा में उच्च स्तरीय प्रतिनिधि भेजें। तीसरा—ऊर्जा सुरक्षा मजबूत करें। रूस से 2 मिलियन बैरल प्रतिदिन जारी, ईरान से 1 मिलियन बहाल। चौथा—बहुपक्षीय मंचों पर सक्रियता। BRICS, SCO से अमेरिकी प्रतिबंधों का विरोध। पांचवां—क्षेत्रीय शांति पहल। ईरान-पाक-अफगानिस्तान त्रिपक्षीय वार्ता की मेजबानी। भारत की कूटनीति परीक्षित—रूस-यूक्रेन युद्ध में तेल खरीदा, लद्दाख में चीन रोका, कतर मध्यस्थ बना। ईरान में भी यही दोहराएं। हरियाणा का महत्व—राज्य की हरित ऊर्जा नीति को ईरान का सस्ता तेल मिले। गुरुग्राम IT निर्यात चाबहार से मध्य एशिया जाए। रोहतक-करनाल के किसान चावल निर्यात दोगुना। भाजपा विधायक नायब सिंह सैनी ने क्षेत्रीय स्थिरता पर जोर दिया।

निष्कर्ष (लगभग 100 शब्द)

आज का क्षण केवल शोक या प्रतिक्रिया का नहीं, बल्कि विवेकपूर्ण निर्णय का है। पश्चिम एशिया की अस्थिरता यह सिखाती है कि शक्ति के प्रयोग से विचार दबते नहीं, बल्कि और प्रखर होते हैं। भारत के लिए आवश्यक है कि वह भावनाओं और दबावों से ऊपर उठकर अपने दीर्घकालिक हितों, क्षेत्रीय शांति और अंतरराष्ट्रीय कानून के पक्ष में स्पष्ट व संतुलित रुख अपनाए। संवाद, बहुपक्षीय सहयोग और ऊर्जा-व्यापार की निरंतरता भारत की रणनीतिक मजबूती हैं। विश्वगुरु बनने का अर्थ तटस्थ चुप्पी नहीं, बल्कि संकट में न्याय, स्थिरता और आत्मसम्मान के साथ नेतृत्व करना है। यही समय की माँग है।

मोदी जी, अब समय बोलने का है। खामेनेई की शहादत पर चुप्पी विश्वगुरु की गरिमा को ठेस पहुंचा रही। अमेरिका-इजरायल की तानाशाही खुले शब्दों में नाम लो। ₹गुरुघंटाल₹ न कहलाओ—G20 नारे से आगे बढ़ो। राष्ट्रपति ट्रंप को फोन करो, चेतावनी दो—ईरान पर अधिक आक्रमण बर्दाश्त नहीं। इजरायल को संयम बरतने को कहो। संसद में बयान दो, चाबहार बचाओ। BRICS से डी-डॉलराइजेशन तेज करो। हरियाणा से लेकर कन्याकुमारी तक भारत ईरान का साथ चाहता। आपने राम मंदिर बनवाया, अयोध्या को जीवंत किया—अब कूटनीति में भी इतिहास रचो। विश्वगुरु बनना नारों से नहीं, साहस से होता। खामेनेई अमर रहें। उनकी शहादत मोदी जी के कंधों पर जिम्मेदारी डाल गई। बोलो, कदम उठाओ—भारत इंतजार कर रहा!

(डॉ. प्रियंका सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान), कवयित्री एवं सामाजिक चिंतक हैं।)

राजनैतिक व्यंग्य-समागम

1. नैतिकता अमर रहे! : विष्णु नागर

हम दुनिया के परम नैतिक लोग हैं। इतने नैतिक कि दुनिया के इतिहास में इतना नैतिक शायद ही कोई हुआ हो ! हमारे प्रधानमंत्री स्वयं में नैतिकता के अद्भुत प्रतिमान हैं। वे गांधी जी से चार कदम आगे हैं, मगर डोनाल्ड ट्रंप जी से तीन कदम और नेतन्याहू से दो कदम पीछे हैं ! ऐसा प्रधानमंत्री सदियों में किसी-किसी देश को मिलता है और इक्कीसवीं सदी में यह हमें मिला है ! वैसे भी जो नान-बायोलॉजिकल होता है, वह आटोमेटिकली नैतिक होता है ! समस्या बायोलॉजिकल्स के सामने आती है, मगर वह समस्या भी समस्या नहीं रहती, क्योंकि नेतृत्व ऐसे नान-बायोलॉजिकल अवतारी पुरुष के हाथ में है, जिसे ईश्वर ने भारत भूमि पर नैतिकता की पुनर्स्थापना के विशेष उद्देश्य से भेजा है। और इस आदेश के साथ भेजा है कि जब तक नैतिकता की प्राण-प्रतिष्ठा न हो जाए, तब तक किसी भी कीमत पर भारत भूमि नहीं छोड़ना है, चाहे सदियां बीत जाएं ! चाहे प्रलय आ जाए, धरती ऊभ-चूभ हो जाए !

हां तो जी, हम परम नैतिक लोग हैं। हमारे यहां प्रधानमंत्री ही नहीं, उनकी सारी सरकार चाल, चरित्र और चेहरे से संपन्न है। ऐसी सरकार दुनिया में पहले कभी नहीं हुई, आगे भी कभी नहीं होगी, आज और अभी है ! यही कारण है कि एपस्टीन सेक्स फाइल पर पूरी दुनिया में हंगामा मचा हुआ है, हमारे यहां नहीं मचा, क्योंकि हमारा नेतृत्व परम नैतिक प्रधान सेवक के हाथ में है ! नैतिकता इस बात की अनुमति नहीं देती कि ऐसी टुच्ची बातों पर हंगामा किया जाए !

नार्वे के पूर्व प्रधानमंत्री थोरब्योर्न जगलैंड ने भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगने पर और उनके घर पर छापा पड़ने पर शर्म के मारे आत्महत्या करने की कोशिश की, क्योंकि भौतिकतावादी पश्चिमी देशों ने कभी चाल, चरित्र और चेहरे के महत्व को नहीं समझा, उन्होंने कभी नागपुर को सेवा तीर्थ नहीं समझा ! समझा होता, तो ये नौबत उनके सामने नहीं आती। हमारे यहां और जो भी आत्महत्या कर ले, नेता नहीं करता ! वह हत्या और आत्महत्या करवाने की क्षमता से लैस होता है, वह आत्महत्या नहीं करता ! ऐसा चलन अगर हमारे यहां होता, तो देश नेताओं से करीब-करीब खाली हो जाता ! हमारे यहां नेता पर जो भी आरोप लग जाएं, वे सिद्ध भी हो जाएं, उसकी चाहे जो फाइल खुल जाए, वह अपने पथ से नहीं डिगता ! वह जानता है कि फाइल बंद होने के लिए है, खोने के लिए है, रिकार्ड रूम में आग लगने पर जल जाने के लिए है ! उसका कोई भी अपराध तब तक अपराध नहीं है, जब तक अपराधी नैतिकता के अलंबरदार की नुमाइंदगी स्वीकार करने को तैयार है ! हर फाइल को बंद करवाने की एक कीमत है और नष्ट करवाने की दूसरी कीमत है। वह दो और फिर सच्चरित्र का प्रमाण पत्र ले जाओ ! और अगर सीना छप्पन इंच का है, तो उसे 106 इंच तक फुलाकर आराम से छाती के बटन खोलकर चलो। और अकेले मत चलो, अपने पीछे पूरी बारात लेकर ठसके से मालाएं गले में लाद कर आगे-आगे चलो ! किसी के पिताजी के पिताजी के दादाजी में भी हिम्मत नहीं कि रोक-टोक सके ! रोकेगा तो हड्डियां अपनी तुड़वाएगा, 106 इंची का बाल भी बांका नहीं होगा ! इसका कारण यह है कि हम दुनिया के परम नैतिक लोग हैं, जो परम नैतिक सरकार के चरम नैतिक मुखिया के नेतृत्व में विश्वगुरु बनने की ओर अग्रसर हैं !

चाल, चरित्र और चेहरे में से एक भी चीज़ जगलैंड जी के पास भी होती, तो पूर्व प्रधानमंत्री होकर वह ऐसी घटिया हरकत कदापि नहीं करते, भाजपा की वाशिंग मशीन में धुल कर सच्चरित्र होकर निकलते ! कोई बड़ी बात नहीं हुई थी, फाइल में उनका नाम ही आया था न, भ्रष्ट होना ही साबित हुआ था न ! इतने से ही वह इतने अधिक घबरा गए, जबकि हमारे यहां भ्रष्ट और एपस्टीनी होने पर नेता पुरस्कृत होते हैं ! हम सनातनी हैं, हमें भ्रष्टाचार जैसी भौतिकताएं छू भी नहीं पातीं !

दुनिया के दस देशों के 15 से अधिक बड़े पदों पर बैठे लोगों को पद छोड़ना पड़ा, ब्रिटेन के पूर्व राजकुमार एंड्रयू तक को ग्यारह घंटे तक जेल की हवा खानी पड़ी, प्रधानमंत्री स्टार्मर को एपस्टीन कांड में ब्रिटेन के बड़े लोगों के शामिल होने पर माफी मांगनी पड़ी। बिल गेट्स ने दो रूसी महिलाओं के साथ संबंध होना स्वीकार कर लिया मगर परम नैतिक लोगों के परम नैतिक प्रधानमंत्री के नेतृत्व में कुछ नहीं हुआ। पेड़ जोर-जोर से हिलाने की कोशिश विपक्ष ने की, मगर पत्तों ने हिलने से मना कर दिया ! हिलाने वाले हार थककर लौट गए। जिन मंत्री जी का नाम आया, वह पहले की तरह दनदना रहे हैं, बल्कि पहले से ज्यादा फनफना रहे हैं, क्योंकि अमेरिका की इतनी कुख्यात फाइल में नाम आ जाना जीवन की कोई छोटी उपलब्धि नहीं है ! अनिल अंबानी की सेहत पर फर्क तो पड़ा है, मगर इस वजह से बिलकुल नहीं पड़ा। जालसाजी की वजह से थोड़ा अंतर पड़ा, पर थोड़ा वक्त बीत जाने दीजिए, उनका भी सब ठीक हो जाएगा ! नैतिकता का पालन करने वाले इस देश में अदालत से भी एक दिन वह परम नैतिक होने का प्रमाणपत्र ले आएंगे !

इस समय हमारे देश में राज चल रहा है। चाल, चरित्र और चेहरे की महत्ता बेहद बढ़ गई है। भारत, नेहरू युग से नैतिकता में बहुत आगे निकल आया है। तब कलयुग था, अब सतयुग आ चुका है ! जल्दी ही त्रेतायुग भी पधार जाएगा !

हमारे यहां सब कुछ नैतिक है। चोरी करना भी नैतिक है, बलात्कार करना भी नैतिक है। हत्या करना भी नैतिक है। हमारी अदालतों पर भ्रष्टाचार का एक दाग तक नहीं चिपका है। चिपका होता, तो हमारे चीफ जस्टिस साहब और प्रधानमंत्री इतने सख्त नहीं हो जाते कि एनसीईआरटी के प्रमुख थर-थर कांपने लग जाते ! हम नैतिक हैं, इसलिए राहुल गांधी के खिलाफ देश भर की अदालतों में 32 मुकदमे चल रहे हैं और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री ने नैतिकता के सर्वोच्च मानदंड स्थापित करते हुए अपने विरुद्ध सभी मुकदमे वापस ले लिये हैं ! हमारे बाबा तक इतने नैतिक हैं कि हत्या और बलात्कार करके जब चाहते हैं, बाहर आ जाते हैं। आज चाहें, तो आज बाहर आ जाएं ! हम इतने नैतिक हैं कि नागपुरी संतरे हैं। हम इतने नैतिक हैं कि मुसलमान की चाय की दुकान मंगलवार को चलने नहीं देते, क्योंकि वह हनुमान जी का दिन होता है और हम इतने नैतिक हैं कि अडानी की झोली इतनी ज्यादा भर देते हैं कि अमेरिकी अदालत जब उसमें छोटा-सा सुराख कर देती है, तो हमारे नैतिक परमाचार्य जी उसे सी कर ठीक कर देते हैं। हम इतने नैतिक हैं कि दुनिया भर में पेगासस जासूसी उपकरण पर तहलका मचता है और यहां मचकर भी नहीं मचता, क्योंकि यहां टीवी चैनल भी नैतिक हैं, अखबार भी नैतिक हैं, सीबीआई भी नैतिक है, अदालत भी नैतिक हैं और जो भी अनैतिक है, सब अंदर जा चुके हैं और जो अभी बचे हुए हैं, अंदर कर दिए जाएंगे। हमारे यहां सबकुछ बर्दाश्त किया जा सकता है, अनैतिकता नहीं !

नैतिकता अमर रहे !

(कई पुरस्कारों से सम्मानित विष्णु नागर साहित्यकार और स्वतंत्र पत्रकार हैं। जनवादी लेखक संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हैं।)

विश्व वन्यजीव दिवस 3 मार्च

वन्यजीवों के सह-अस्तित्व से धरा रहेगी सुंदर-स्वस्थ

प्रमोद दीक्षित मलय

संपूर्ण जीव जगत की भौतिक देह का निर्माण मिट्टी, जल, अग्नि, आकाश और वायु इन पांच तत्वों के संयोग से ही होता है। क्योंकि जीव प्रकृति का एक घटक है जो प्रकृति की गोद में ही जन्मता और मरता है। हम कह सकते हैं कि ये पंचमहाभूत मिलकर ही प्रकृति का निर्माण करते हैं। प्रकृति ही सभी जीवों एवं वनस्पतियों की आश्रयस्थली एवं जीवन का आधार है। मानव, पशु-पक्षी, वनस्पतियां, सागर-सरिताएं, गिरि-कानन आदि मिलकर जैव पारिस्थितिकी तंत्र बनाते हैं। तो प्रकृति के संतुलन के लिए जरूरी है कि प्राकृतिक जैव पारिस्थितिकी तंत्र सुचारू रूप से संचालित होता रहे। प्रकृति के संरक्षण एवं संवर्धन में प्रत्येक जीव-वनस्पति की जैव मंडल तंत्र में एक खास भूमिका निश्चित है जो परस्पर अवलंबित एवं महत्वपूर्ण है, साथ ही सह-अस्तित्व पर केंद्रित भी। कोई भी अन्तः वाह्य अनावश्यक दबाव एवं हस्तक्षेप उसकी सम्यक भूमिका निर्वहन में न केवल बाधक होता है बल्कि तंत्र को प्रभावित कर असंतुलन का शिकार भी बनाता है।

हम देखते हैं कि जीवन निर्वाह के लिए प्रकृति में एक खाद्य श्रंखला व्यवस्थित रूप से विद्यमान है। जो संतुलन साधते हुए प्रकृति के सौंदर्य और अस्तित्व को भी बनाए रखती है। मानव प्रकृति की इस श्रंखला तंत्र में सर्वोपरि है। वह विवेकवान सचेतन प्राणी है, पर निहित स्वार्थ की पूर्ति के लिए वह विवेकहीन हो अपनी बुद्धि बल से प्रकृति के पारिस्थितिकी तंत्र को बाधा पहुंचाकर सम्पूर्ण जीव जगत के जीवन पर संकट के रूप में उभर आया है। स्वार्थपरता में अपनी सुख-सुविधा हेतु न केवल भौतिक संसाधनों अपितु जैव विविधता का, शोषण कर रहा है। जैव विविधता सभी जीवों के जीवन के लिए बहुत आवश्यक है। वास्तव में, मानव जीवन प्रकृति के सह-अस्तित्व पर ही निर्भर है।

प्रकृति जीवनदायिनी मां है। वह सभी प्राणियों एवं वनस्पतियों का पोषण करती है। थका हारा मानव मन प्रकृति-माता के आंचल की सुखद छांव में शान्ति पाता है। कलरव करती कल्लोलिनी का शीतल नीर पान कर वह तृप्ति का अनुभव करता है। कोयल की कूक मन की वितृष्णा और शोक को हर लेती है। पपीहे की टेर उसके अंतर्मन

के भाव का जागरण करती है। ऊंचे हिमाच्छादित गिरि शिखर उसमें आशा का संचार करते हैं। गगन में उड़ते श्वेत बलाक गण उसके अंदर जीने का उत्साह जगाते हैं। सिंधु की उत्ताल तरंगों से अठखेलियां करते समुद्री जीव उसमें जीवन के प्रति आकर्षण पैदा करते हैं। कानन केसरी की गर्जना उसमें वीरत्व भाव का उन्मेष करती है। प्रकृति में अवस्थित सूक्ष्म जीवाणु, फंगस, काई, चींटी, भौंरों, तितलियों से लेकर गौरैया, गिद्ध, चील, बाज, मोर, मीन, कच्छप, मकर, डाल्फिन और हाथी, सिंह, शार्क, ह्वेल तक सभी पशु-पक्षी, मानव एवं विभिन्न प्रकार के पादप और वनस्पति जीवन के लिए एक दूसरे पर निर्भर हैं। जब इनमें से किसी एक के साथ छेड़छाड़ की जाती है तो उसका प्रभाव पूरे जैवमंडल पर पड़ता है।

वन्यजीवों के जीवन के संरक्षण के लिए वन्यजीव प्रेमी आंदोलन एवं अभियान के माध्यम से जन जागरूकता का काम करते हुए सरकारों को चेताते रहे हैं। तो संकटग्रस्त जीवों के महत्व के प्रति वैश्विक जागरूकता बढ़ाने और उनको विलुप्त होने से बचाने एवं संरक्षित करने की पहल के रूप में संयुक्त राष्ट्र संघ ने अपने 68वें अधिवेशन में थाईलैंड के प्रस्ताव पर 20 दिसम्बर, 2013 को आम सहमति से प्रति वर्ष 3 मार्च को 'विश्व वन्यजीव दिवस' मनाने का निर्णय लिया। सभी सदस्य देश आयोजन कर प्रकृति के सह-अस्तित्व के संदेश को आत्मसात करने और दैनंदिन व्यवहार में उतारने का संकल्प लेते हैं। यह आयोजन प्रत्येक वर्ष एक थीम पर केंद्रित होता है। 'सुगंधित एवं औषधीय पौधे : स्वास्थ्य, विरासत और आजीविका का संरक्षण' वर्तमान वर्ष के आयोजन का विषय है जो वन्यजीवों एवं प्रकृति के महत्व को दर्शाता है।

एक अध्ययन के अनुसार दुनिया के तीन अरब लोगों का जीवन और जीविका समुद्र एवं तटीय जैव विविधता एवं संसाधनों पर आश्रित है। समुद्री एवं तटीय संसाधनों पर केंद्रित उद्योग धंधों का उत्पादकता मूल्य 3 खरब डालर से कहीं अधिक है जो विश्व की जीडीपी का 5 प्रतिशत है। लेकिन आज यह समुद्र और समुद्री जीव जगत जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण के कारण दुर्दशा का शिकार है। समुद्री जीवों की बहुत सारी प्रजातियां विलुप्ति की कगार पर हैं। इंटरनेशनल यूनियन कंजर्वेशन ऑफ नेचर के एक अध्ययन के अनुसार जीवो की 2500 से अधिक प्रजातियां संकट में हैं।

2. मोदी जी का मास्टर स्ट्रोक ही मास्टर स्ट्रोक ! : राजेंद्र शर्मा

अब बोलें क्या कहते हैं, मोदी जी के मास्टर स्ट्रोक का मास्टर होने पर सवाल उठाने वाले। कम से कम मोदी जी के इज़रायल दौरे और ईरान पर इज़रायल के हमले की क्रोनोलॉजी सामने आने के बाद तो ऐसे सवाल उठाने वालों के मुंह बंद ही हो जाने चाहिए। आखिरकार, ऐसी कमाल की टाइमिंग किसी नेहरू, किसी इंदिरा की थी क्या? सिर्फ दो दिन का दौरा -- 25 की सुबह रवानगी और 26 की शाम वापसी। और 28 की सुबह, ईरान पर इज़रायल का हमला चालू, बल्कि हमला भी कहां, महज 'निवारक प्रहार'।

यानी लड़ाई की सारी तनातनी के बीचो-बीच, मोदी जी इज़रायल पहुंच भी गए, अपने पक्के दोस्त बीबी उर्फ नेतन्याहू से झप्पी-पप्पी भी कर ली, इज़रायल की संसद को सदा साथ देने का भरोसा भी दे दिया। और इससे पहले कि इज़रायल अपना हमला शुरू करता, लौटकर सुरक्षित घर भी आ गए।

बल्कि जब ईरान पर इज़रायल का हमला शुरू हुआ, तब तक तो मोदी जी अजमेर में कई सरकारी उद्घाटनों के साथ, अपने एआई ईवेंट का मजा किरकिरा करने वाले नौजवानों के बहाने, विरोधियों पर एक बार फिर हमला भी कर चुके थे। अगर तेल अवीव में मोदी जी का ''डीयर फ्रेंड'' अपने हमले में ईरान के तबाह हो जाने के दावे कर रहा था, तो अजमेर में नेतन्याहू का ''ब्रदर'' विपक्षी प्रदर्शनकारियों पर हमला करने वालों की पीठ ठोक रहा था। मोदी जी ने ऐन मौके पर पहुंच कर नेतन्याहू के कान में जो शांति का मंत्र दिया था, वह युद्ध के मैदान में बखूबी काम कर रहा था -- मंत्र पाने वाले पर ही नहीं, मंत्र देने वाले पर भी ! घर में घुसकर मारने का शांति मंत्र है ही ऐसा !

लेकिन, यह विरोधियों का झूठा प्रचार है कि मोदी जी, ईरान पर हमले के लिए ''डीयर फ्रेंड'' को अपना समर्थन देने के लिए ही दौड़े-दौड़े इज़रायल गए थे। सोचने की बात है, समर्थन देने के लिए मोदी जी को निजी हवाई जहाज लेकर, दौड़े-दौड़े तेल अवीव जाने की क्या जरूरत थी? डियर फ्रेंड चाहे वाशिंगटन में बैठता हो या तेल अवीव में, डीयर फ्रेंडों के लिए मोदी जी का समर्थन हमेशा ही बना रहा है। मोदी जी को कम से कम बार-बार मिलकर, अपने समर्थन का भरोसा दिलाने की जरूरत तो नहीं ही पड़ती है। फिर नेतन्याहू के ''जो ठीक समझे करने'' के लिए मोदी जी का समर्थन पिछले दो-ढाई साल से यानी हमास के सफाए के नाम पर फिलिस्तीनियों के सफाए की डियर फ्रेंड की मुहिम की शुरुआत से ही बना हुआ है।

और रही ईरान पर हमले की बात, तो पिछले साल भी तो इज़रायल ने ईरान पर हमला किया था, जिसके पीछे-पीछे अमेरिका ने भी हमला किया था। तब क्या मोदी जी ने इज़रायल को हमला करने से मना किया था? तब तो हमले से पहले मोदी जी को दौड़े-दौड़े इज़रायल जाने की जरूरत नहीं पड़ी थी। साफ है कि यह इल्जाम झूठा है कि हमले से ठीक पहले इज़रायल को समर्थन देने के लिए ही मोदी जी दौड़े-दौड़े तेल अवीव गए थे।

जाहिर है कि मोदी जी पर ऐसे इल्जाम लगाने वाले यह दिखाना चाहते हैं कि मोदी जी के दौरे से जो भी मिला है, इज़रायल को ही मिला है ; भारत को कुछ नहीं मिला है। सच पूछिए तो यह एक फैशन सा ही हो गया है, बल्कि यह भी एक अंतर्राष्ट्रीय षडयंत्री टूल किट का हिस्सा है कि मोदी जी जब भी किसी डियर फ्रेंड से मिलने जाते हैं, सोशल मीडिया में उनके गले पड़ने और खी-खी-खी करने के वीडियो चलाए जाते हैं और विरोधी सुर में सुर मिलाकर पूछने लगते हैं -- इस दौरे से भारत को क्या मिला? इसीलिए तो मोदी जी जहां भी जाते हैं, जाने से पहले कोई न कोई सम्मान पाने का जुगाड़ जरूर बैठाकर जाते हैं। मोदी जी के सम्मान के बाद, विरोधियों के मुंह अगर बंद नहीं भी हो जाएं, तब भी कम से कम वे यह नहीं कह पाते हैं कि भारत को क्या मिला? सम्मान ! सम्मान से बढ़कर, कोई विश्व गुरु को और दे भी क्या सकता है?

इस बार इज़रायल की यात्रा में तो मोदी जी ने कमाल ही कर दिया। यह तो मास्टर स्ट्रोक का भी मास्टर स्ट्रोक हो गया। मोदी जी सिर्फ सम्मान ही नहीं लेकर आए, वह एकदम नया-निकोरा सम्मान लेकर आए हैं। मोदी जी एक ऐसा सम्मान लेकर आए हैं, जो न उनसे पहले किसी को मिला है और न उनके बाद ही किसी को मिलने की संभावना है। मोदी जी विश्व में इस सम्मान को पाने वाले अकेले हैं और बीबी से दोस्ती बनी रहे, मोदी जी विश्व में इस सम्मान को पाने वाले अकेले ही बने रहेंगे। विरोधी जलते हैं, जो यह प्रचार कर रहे हैं कि इस डीयर फ्रेंड ने भी मोदी जी को सस्ते में निपटा दिया, बल्कि एक तरह से ठग ही लिया। पुरस्कृत करने का लालच देकर, लड़ाई छेड़ने से ठीक पहले बुला लिया, अपना समर्थन भी करा लिया और पुरस्कार के नाम पर, इज़रायल का सर्वोच्च सम्मान देने के बजाए, एक झूठा मैडल थमा दिया। पर सच पूछिए तो झूठा तो वह मैडल होता है, जो पहले किसी और को दिया गया हो, जिस पर पहले किसी और के हाथ लगे हों। नया-निकोरा मैडल, झूठा हो ही कैसे सकता है? बल्कि हम तो कहते हैं कि जो सम्मान पहले किसी को दिया जा चुका हो, उसे सर्वोच्च कहना ही गलत है? वहां तो बराबर में दूसरे लोग, पहले से बैठे हुए हैं। सम्मान तो नया निकोरा ही सर्वोच्च हो सकता है, वह भी तब, जब इसकी गारंटी हो कि आगे किसी को दिया भी नहीं जाएगा।

फिर मोदी जी इज़रायल से सिर्फ पुरस्कार थोड़े ही लेकर आए हैं? इज़रायली संसद का पुरस्कार याद रहा, पर संसद में मोदी जी का भाषण कैसे भूल गए -- इज़रायल फादरलैंड एंड इंडिया मदरलैंड वाला भाषण। बेशक, भाषण दिया जाता है, पर उसमें बजी तालियां तो मोदी जी देश तक लेकर आए ही हैं। और पूर्व-सांसदों की मोदी-मोदी भी ! माना कि विपक्ष का बहिर्गमन भी साथ आया है, पर एक नेहरू पछाड़ रिकार्ड भी तो मोदी ने अपने नाम करा लिया है बल्कि अपने से पहले के सभी प्रधानमंत्रियों को पछाड़ने वाला रिकार्ड। मोदी जी भारत के पहले प्रधानमंत्री हैं, जिसने इज़रायल की संसद को संबोधित किया है और वह भी मोदी-मोदी कराने के साथ। सच पूछिए, तो यह तो विश्व रिकॉर्ड ही हो गया। ट्रंप के संबोधन के टैम पर भी ट्रंप-ट्रंप थोड़े ही हुआ था ! वैसे लाने को तो मोदी जी पेगासस टाइप और भी कुछ न कुछ अपनी गुप्त जेब में डालकर लाए होंगे, पर राष्ट्र की और अपनी भी सुरक्षा की खातिर उसकी चर्चा हम नहीं करें, तो ही बेहतर है।

विश्व रिकॉर्ड बनाकर, एक नया पुरस्कार गढ़वा कर, अपनी शॉपिंग लिस्ट पहुंचाकर, लड़ाई छिड़ने से ऐन पहले मोदी जी सुरक्षित लौट आए, देश को यह हकीकत बताने कि उनसी1के एआई इवेंट में उनके भक्तों ने विरोध प्रदर्शन करने वालों पर जूते भी चलाए थे ! यह मास्टर स्ट्रोक नहीं, तो और क्या है !?

(व्यंग्यकार वरिष्ठ पत्रकार और साप्ताहिक समाचार पत्र 'लोकलहर' के संपादक हैं।)

जय कृष्णी पंथ के संत अधिकरणों ने किया अमृतसर की भूमि को निहाल: डॉ सागर मुनि शास्त्री

धार्मिक संत सम्मेलन में आम खास ने लगायी हाजरी

अमृतसर 2 मार्च (साहिल बेरी)

अध्यात्म केंद्र प्राचीन मंदिर श्री जय कृष्णियाँ चौंक पासियाँ मंदिर का 59 वाँ वार्षिक महोत्सव और संत सम्मेलन ए.एस फ़ार्म बटाला रोड अमृतसर में मनाया गया। महंत न्याम्बास बाबा के शुभ हस्त से धवजारोहण किया गया। उपाध्य आम्नाय महंत श्री शेवलीकर बाबा और कवीश्वर कुलाचार्य महंत श्री खामनीकर बाबा और महंत श्री यश राज शास्त्री की अध्यक्षता में करवाये गये इस धार्मिक समारोह में विधायक कुंवर विजय प्रताप सिंह, पूर्व विधायक सुनील दत्ती, कांग्रेसी नेता विकास सोनी, नगर निगम के सहायक कमिश्नर विशाल वधावन, करमजीत सिंह रिंटू, ओम प्रकाश सोनी, डॉ जसविंदर कौर सोहल, सजीव अरोड़ा, प्रमोद कुमार तथा कई प्रमुख लोग शामिल हुए। कार्यक्रम के अध्यक्ष शेवलीकर बाबा कहा कि जय कृष्णियाँ मंदिर के संचालक डॉ सागर मुनि शास्त्री जी के द्वारा आयोजित ये भव्य दिव्य कार्यक्रम अद्भुत है और उन की गुरुओं के प्रति श्रद्धा समाज को प्रेरित किया है ।जय कृष्णी पंथ के ध्वज को सर्वत्र प्रसारित करने का मान श्री शास्त्री जी को है। इस कार्यक्रम में तलेगांवकर पीढ़ी और खामनीकर पीढ़ी की पवित्र देवपूजा नमस्कार करवाई गई । इस धार्मिक समागम में युवा वर्ग का धर्म के प्रति उत्साह अद्भुत था। डॉ सागर मुनि शास्त्री ने बताया कि आये हुए संतों के द्वारा श्री मदभाग्वद्गीता का पाठ, संतों का स्वागत, दीप प्रज्वलन, ज्ञान सत्र और पंचावतार महोत्सव मनाया गया। आई हुए संगत को जय कृष्णी पंथ के ध्वज दे कर सम्मानित किया गया और आये हूए संतों का सत्कार समारोह संपन्न किया गया। इस मौके पर मंदिर के प्रधान अंजना लूथरा, अनीता शर्मा, स्वीटी कपूर, डॉ नवदीप शर्मा कीर्तिका धवन, मनीष मट्टू, अमित शिंगारी, नीलम महाजन, रजत महाजन, आदि भक्त मोजूद थे।

आरटीआई एक्टिविस्ट डॉ. राजकुमार यादव की भाजपा के कद्दावर नेता श्याम जाजू से भेंट

परिवहन विशेष न्यूज

राजनीतिक परिदृष्यों को समझने के लिए भेंट लाभप्रद रहा

राउरकेला : राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में आरटीआई एक्टिविस्ट डॉ. राजकुमार यादव ने भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्याम जाजू से उनके आवास पर शिष्टाचार भेंट की। इस आत्मीय मुलाकात ने राजनीतिक हलकों में कई तरह की हो रही गतिविधियां व चर्चाओं को समझने का अवसर प्रदान किया ऐसा डॉ यादव ने कहा1

सूत्रों के अनुसार, मुलाकात सौहार्दपूर्ण वातावरण में हुई, जिसमें समसामयिक राजनीतिक मुद्दों, जनहित के विषयों तथा पारदर्शिता से जुड़े प्रश्नों पर विचार-विमर्श हुआ। डॉ. राजकुमार यादव लंबे समय से सूचना के अधिकार और जनजागरूकता अभियानों से जुड़े रहे हैं, जबकि श्री जाजू संगठनात्मक अनुभव और राजनीतिक रणनीति के लिए स्तम्भ के रूप में जाने जाते हैं।

हालांकि मुलाकात को औपचारिक रूप से शिष्टाचार भेंट बताया जा रहा है, लेकिन राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि इसके दूरगामी संकेत हो सकते हैं। आगामी चुनावी परिदृश्य और बदलते राजनीतिक समीकरणों के बीच इस मुलाकात को महत्वपूर्ण माना जा रहा है। राजनीतिक पर्यवेक्षकों का कहना है कि यदि यह संवाद आगे किसी ठोस पहल में बदलता है तो क्षेत्रीय राजनीति में नई दिशा देखने को मिल सकती है। डॉ यादव ने कहा ₹राजनैतिक अनुभव के भंडार, भाजपा के सबसे सुलझे व सौम्य चेहरे में से एक श्री जाजू परिपकव राजनीती की एक प्रमुख किताब हैं व मुलाक़ातों का दौर जारी रहेगा1

DG RPF ने ईस्ट कोस्ट रेलवे के अधिकारियों के साथ रिव्यू मीटिंग की

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर, 2/3 : DG RPF सुश्री सोनाली मिश्रा, IPS ने आज भुवनेश्वर के रेलवे सदन में ईस्ट कोस्ट रेलवे के जनरल मैनेजर श्री दीमा फुंकवाल और सीनियर अधिकारियों के साथ एक रिव्यू मीटिंग की। मीटिंग में रेलवे सिक्योरिटी को मज़बूत करने, पैसेंजर सेफ्टी बढ़ाने, भीड़ कंट्रोल में सुधार करने और पूरे ज़ोन में ट्रेन ऑपरेशन को आसान और सुरक्षित बनाने के लिए इंटर-डिपार्टमेंटल कोऑर्डिनेशन को मज़बूत करने पर फोकस किया गया। ट्रैक पर पैसेंजर की सेफ्टी पक्का करने, ट्रेसपासिंग रोकने और रेलवे लाइन पार करने जैसे असुरक्षित कामों को रोकने के लिए उठाए गए कदमों का डिटेल्ड रिव्यू भी किया गया।

सिक्योरिटी मैनेजमेंट के लिए एक प्रोएक्टिव, सेंसिटिव और पैसेंजर-फ्रेंडली तरीका अपनाने पर खास ज़ोर दिया गया, जिसमें महिलाओं, बच्चों, सीनियर सिटिजन और दूसरे कमज़ोर ग्रुप की सेफ्टी और इज्ज़त पर खास ध्यान दिया गया। DG ने मानसून सीज़न के दौरान भीड़ मैनेजमेंट से जुड़े इंतज़ामों, सेंसिटिव जगहों पर RPF जवानों की तैनाती और स्टेशन परिसर और ट्रांसपोर्ट एरिया की असरदार निगरानी का रिव्यू किया।

चर्चा के दौरान, सुश्री मिश्रा ने सतर्कता और जल्दी जवाब देकर जनता का भरोसा जीतने पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा कि पैसेंजर सिक्योरिटी दिखने वाली, आसानी से समझ में आने वाली और भरोसेमंद होनी चाहिए ताकि हर पैसेंजर न सिर्फ़ ट्रेन के अंदर बल्कि स्टेशन, प्लेटफ़ॉर्म और घूमने-फिरने की जगहों पर भी सुरक्षित महसूस करे।

अफ़सरों को स्टाफ़ को अच्छे व्यवहार, शिकायतों का तुरंत समाधान और अपराधों को रोकने और उनका पता लगाने के लिए मॉडर्न सर्विलांस सिस्टम और टेक्नोलॉजी के असरदार इस्तेमाल के बारे में जागरूक करने के लिए बढ़ावा दिया गया। हादसों को रोकने और ट्रैक की सुरक्षा पक्का करने के लिए लगातार पेट्रोलिंग की अहमियत पर भी ज़ोर दिया गया।

सुरक्षित और लोगों को ध्यान में रखकर बनाई गई रेलवे सेवाओं के लिए अपना वादा दोहराते हुए, ईस्ट कोस्ट रेलवे ने सुरक्षा उपायों को और मज़बूत करने और हर पैसेंजर के लिए एक सुरक्षित, भरोसेमंद और भरोसे वाला यात्रा अनुभव पक्का करने के लिए RPF के साथ पूरा सहयोग करने का भरोसा दिया है।

तंदरुस्त, मज़बूत और एकजुट: अमनदीप अस्पताल का वार्षिक खेल दिवस 2026: एक शानदार सफलता

अमृतसर 2 मार्च (साहिल बेरी)

अमनदीप अस्पताल ने उजाला सिग्नस के साथ साझेदारी में 27-28 फरवरी को अमृतसर स्थित अमनदीप क्रिकेट अकादमी में अपना वार्षिक खेल दिवस 2026 सफलतापूर्वक आयोजित किया। दो दिवसीय इस कार्यक्रम में विभिन्न स्थानों पर कार्यरत सभी विभागों के कर्मचारी एक साथ आए और उन्होंने अपनी एकता, फिटनेस और उत्साह का प्रदर्शन किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ अमनदीप अस्पताल के आंतरिक चिकित्सा विभाग के प्रमुख डॉ. कंवरजीत सिंह द्वारा गुब्बारे छोड़ने की रस्म से हुआ। कार्यक्रम में रोमांचक खेल प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं, जिन्होंने सौहार्द, टीम वर्क और शारीरिक फिटनेस को बढ़ावा दिया। उजाला सिग्नस के साथ साझेदारी में अमनदीप अस्पताल की निदेशक डॉ. अमनदीप कौर ने समग्र स्वास्थ्य के प्रति अस्पताल की प्रतिबद्धता पर जोर देते हुए कहा, ₹स्वस्थ शरीर स्वस्थ मन को पोषित करता है, और यह आयोजन स्वास्थ्य सेवा में हमारे मिशन को आगे बढ़ाने वाली भावना को मजबूत करता है। वार्षिक खेल दिवस ने कर्मचारियों के कल्याण और टीम वर्क, अनुशासन और एकता के मूल्यों के प्रति अमनदीप की प्रतिबद्धता को याद दिलाया, साथ ही कर्मचारियों को अपने पेशेवर भूमिकाओं से परे जुड़ने का एक मंच प्रदान किया। कार्यक्रम का समापन पुरस्कार वितरण और सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ हुआ।

अमनदीप समूह एक प्रमुख स्वास्थ्य सेवा नेटवर्क के रूप में विकसित हुआ है, जिसमें छह रणनीतिक स्थानों पर 750 से अधिक बिस्तर और 170 से अधिक विशेषज्ञ डॉक्टरों की एक प्रतिष्ठित टीम शामिल है। सेवा की समृद्ध विरासत के साथ, समूह ने 25 लाख से अधिक रोगियों के जीवन को बदला है, और क्षेत्र में सुलभ, किफायती और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा के मानकों को लगातार ऊंचा उठाया है।

एफएसएसएआई की ताज़ा मिल्क सर्विलांस रिपोर्ट 2025- जांच में 38 प्रतिशत नमूने मिलावटी, हर तीन में से एक नमूना फेल -उम्र कैद व 10 लाख तक जुर्माना जैसे प्रावधान निष्प्रभावी? -एक समग्र विश्लेषण

वैश्विक दूध उत्पादन में भारत क़ी लगभग 25 प्रतिशत हिस्सेदारी -उत्पादन में रिकॉर्ड वृद्धि के बावजूद गुणवत्ता पर प्रश्नचिह्न लगे? दूध में पानी, डिटर्जेंट, यूरिया, स्टार्च या सिंथेटिक रसायन मिलाना न केवल आर्थिक धोखाधड़ी है बल्कि यह स्वास्थ्य के लिए गंभीर जोखिम- शासन प्रशासन को तुरंत एक्शन मोड में आने की ज़रूरत -**एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर वर्तमान डिजिटल और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के युग में जहां एक ओर डेटा एनालिटिक्स, ब्लॉकचेन ट्रेसबिलिटी और स्मार्ट सप्लाई चेन जैसी तकनीकें विकसित हो रही हैं, वहीं दूसरी ओर खाद्य पदार्थों में मिलावट का संकट भी समानांतर रूप से बढ़ता दिखाई दे रहा है ।यह विरोधाभास विशेष रूप से भारत जैसे विशाल उपभोक्ता बाजार में अधिक स्पष्ट है ।त्योहारों का मौसममें विशेषकर होली के त्योहार से शुरू हो जाता है, मिठाइयाँ, घी खोआ और दूध की मांग को कई गुना बढ़ा देता है। ऐसे समय में खाद्य सुरक्षा नियामक संस्था भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण द्वारा राज्यों को मिलावट रोकने हेतु सख्त निगरानी के निर्देश जारी करना इस संकट की गंभीरता को दर्शाता है। हाल ही में कुछ दिनों पूर्व जारी की गई एफएसएसएआई की मिल्क सर्विलांस रिपोर्ट में चौंकाने वाले निष्कर्ष आए है जिससे शासन प्रशासन को एक्शन लेना जरूरी हो गया है। हालिया मिल्क सर्विलांस रिपोर्ट 2025-26 में यह सामने आया कि लगभग 33 से 38 प्रतिशत दूध के नमूने गुणवत्ता मानकों पर खरे नहीं उतरे ।इनमें पानी, डिटर्जेंट, यूरिया, न्यूट्रलाइज़र और अन्य रासायनिक तत्वों की मिलावट पाई गई। कुछ पैकेटबंद दूध के नमूनों में कोलिफॉर्म बैक्टीरिया और टोटल प्लेट काउंट स्वीकार्य सीमा से कई गुना अधिक दर्ज किया गया। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं क़ि यह केवल गुणवत्ता का प्रश्न नहीं बल्कि सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए प्रत्यक्ष खतरा है। दूध, जो बच्चों, बुजुर्गों और रोगियों के लिए पोषण का प्रमुख स्रोत है, यदि संदूषित हो जाए तो इसका प्रभाव दीर्घकालिक स्वास्थ्य समस्याओं के रूप में सामने आ सकता है। रिपोर्ट में क्षेत्रीय असमानता भी दर्ज की गई है ।उत्तर भारत सबसे अधिक प्रभावित इसको समझने की करें तो रिपोर्ट के अनुसार उत्तर भारत में 47 प्रतिशत नमूने मानकों में विफल पाए गए, जो इसे सबसे असुरक्षित क्षेत्र बनाता है। इंडियन जर्नल ऑफ कम्युनिटी मेडिसिन की एक ताजा स्टडी में 330 नमूनों की जांच की गई, जिसमें से 70.6 प्रतिशत में गंभीर मिलावट पाईगई। मिलावट के मुख्य कारक इस प्रकार हैं:पानी:193 नमूनों में मात्रा बढ़ाने के लिए पानी मिलाया गया ।डिटर्जेंट (23.9 प्रतिशत):झाग बनाने और दूध को गाढ़ा दिखाने के लिए ।यूरिया (9.1प्रतिशत):फैट और प्रोटीन की मात्रा को कृत्रिम रूप से बढ़ाने के लिए ।विशेषज्ञों का कहना है कि कोलीफॉर्म और डिटर्जेंट युक्त दूध पीने से पेट में संक्रमण, किडनी की बीमारी और दीर्घकालिक स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं ।उपभोक्ताओं को सलाह दी जाती है कि वे दूध खरीदने से पहले ब्रांड की लेटेस्ट लैब रिपोर्ट और एफएसएसएआई मार्क की जांच जरूर करें ।पश्चिम भारत में यह आंकड़ा 23 प्रतिशत, दक्षिण भारत में 18 प्रतिशत और पूर्वी भारत में 13 प्रतिशत रहा ।उत्तर प्रदेश और राजस्थान जैसे बड़े दुग्ध उत्पादक राज्यों में मिलावट की घटनाओं ने चिंता बढ़ा दी है, जबकि तमिलनाडु और केरल जैसे दक्षिणी राज्यों में भी उल्लेखनीय मामलों की पुष्टि हुई ।यह क्षेत्रीय असमानता संकेत देती है कि निगरानी, आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन और प्रवर्तन क्षमता में बहुत मात्रा में अंतर है।

साथियों बात अगर हम भारतः विश्व का सबसे बहुत बड़ा दूध उत्पादक फिर भी संकटग्रस्त इसको समझने की करें तो सरकारी आंकड़ों के अनुसार 2025 में भारत का कुल दूध उत्पादन 24.8 करोड़ टन तक पहुंच गया है। पिछले 11 वर्षों में उत्पादन में 69.4 प्रतिशत वृद्धि दर्ज की गई है। प्रति व्यक्ति उपलब्धता 485 ग्राम प्रतिदिन हो गई है, जो वैश्विक औसत (लगभग 328 ग्राम) से कहीं अधिक है। भारत वैश्विक दूध उत्पादन में लगभग 25 प्रतिशत हिस्सेदारी रखता है। परंतु विडंबना यह है कि उत्पादन में रिकॉर्ड वृद्धि के बावजूद गुणवत्ता पर प्रश्नचिह्न लग रहे हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि मात्रा की दौड़ में गुणवत्ता नियंत्रण तंत्र पीछे छूट गया है ।हाल ही में ट्रस्टिफाइड नामक स्वतंत्र लैब टेस्टिंग प्लेटफॉर्म की रिपोर्ट में दावा किया गया कि कुछ प्रतिष्ठित पैकेज्ड दूध ब्रांड्स में कोलिफॉर्म बैक्टीरिया निर्धारित सीमा से 98 गुना तक अधिक पाया गया। इस खुलासे ने उपभोक्ताओं के विश्वास को झटका दिया है। डिजिटल युग में जहां उपभोक्ता जागरूकता सोशल मीडिया के माध्यम से तीव्रता से फैलती है, ऐसे खुलासे कंपनियों की ब्रांड वैल्यू और बाजार हिस्सेदारी को गहरा व भारी मात्रा में नुकसान पहुंचा सकते हैं।

साथियों बात अगर हम दूध में मिलावटः केवल धोखाधड़ी नहीं, सार्वजनिक स्वास्थ्य पर हमला इसको समझने की करें तो, दूध में पानी, डिटर्जेंट, यूरिया, स्टार्च या सिंथेटिक रसायन मिलाना न केवल आर्थिक धोखाधड़ी है बल्कि यह स्वास्थ्य के लिए गंभीर जोखिम है। यूरिया और डिटर्जेंट जैसे तत्व गुर्दे, लीवर और पाचन तंत्र पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकते हैं ।कोलिफॉर्म बैक्टीरिया की उपस्थिति जलजनित रोगों और फूड पॉइजनिंग का संकेत देती है। बच्चों में यह संक्रमण, डायरिया और दीर्घकालिक कुपोषण का कारण बन सकता है ।कानूनी ढांचाः कड़े प्रावधान, कमजोर क्रियान्वयन भारत में दूध मिलावट एक गंभीर दंडनीय अपराध है। फ़ूड सेफ्टी एंड स्टैण्डर्ड्स एक्ट की धारा 59 के तहत असुरक्षित भोजन के लिए छह वर्ष तक की सजा और पांच लाख रुपये तक जुर्माने का प्रावधान है; मृत्यु होने पर आजीवन कारावास और न्यूनतम दस लाख रुपये जुर्माना लगाया जा सकता है। धारा 51 सब-स्टैंडर्ड खाद्य के लिए पांच लाख तक जुर्माना, धारा 52 गलत ब्रांडिंग के लिए तीन लाख तक जुर्माना और धारा 53 भ्रामक विज्ञापन के लिए दस लाख तक जुर्माना निर्धारित करती है ।इसके अतिरिक्त इंडियन पेनल कोड की धारा 272 (खाद्य पदार्थ में मिलावट) और 273 (हानिकारक खाद्य की बिक्री) के तहत छह माह तक की सजा का प्रावधान है, जबकि धारा 420 के अंतर्गत धोखाधड़ी के लिए सात वर्ष तक की सजा हो सकती है ।एसेंशियल कमोडिटीज एक्ट के अंतर्गत भी आवश्यक वस्तु घोषित क्षेत्रों में अतिरिक्त कार्रवाई संभव है ।कई राज्यों ने इसे गैर- जमानती अपराध बनाकर कठोर संशोधन किए हैं ।क्रियान्वयन कीसबसे बढ़ी चुनौतीः प्रशासनिक ढिलाई या संरचनात्मक कमी ?यद्यपि कानून सख्त हैं, परंतु विशेषज्ञों का मत है कि उनका क्रियान्वयन अपेक्षित कठोरता से नहीं हो पा रहा। निरीक्षण की संख्या, लैब परीक्षण क्षमता और अभियोजन की गति में सुधार की आवश्यकता है। कई मामलों में दोष सिद्धि दर कम रहती है, जिससे मिलावटखोरों में दंड का भय कम हो जाता है। लाइसेंस रद्द करना, प्रतिष्ठान सील करना और पुनरावृत्ति पर कठोर दंड जैसे प्रावधानों का प्रभावी उपयोग जरूरी है।

साथियों बात कर हम क्या कुछ आलोचकों द्वारा आरोप क़ि दूध आयात की जमीन तैयार हो रही है ? इसको समझने की करें तो कुछ विशेषज्ञों और राजनीतिक विश्लेषकों ने यह प्रश्न उठाया है कि बढ़ती मिलावट और गुणवत्ता संकट की चर्चा कहीं भविष्य में दूध आयात के लिए माहौल तैयार करने का प्रयास तो नहीं। हालांकि इस संबंध में कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं है, परंतु बढ़ती खपत और गुणवत्ता संबंधी चिंताओं ने इस बहस को जन्म दिया है। भारत जैसे देश में, जहां दुग्ध अर्थव्यवस्था करोड़ों किसानों की आजीविका से जुड़ी है, आयात नीति का प्रभाव व्यापक सामाजिक-आर्थिक परिणाम ला सकता है।

साथियों बात अगरहम डिजिटल समाधानः एआई, ब्लॉकचेन और ट्रेसबिलिटी इसको समझने की करें तो डिजिटल और एआई तकनीकें इस संकट कासमाधान भी प्रस्तुत कर सकती हैं। ब्लॉकचेन आधारित ट्रेसबिलिटी से दूध की पूरी आपूर्ति श्रृंखला को ट्रैक किया जा सकता है, गांव के डेयरी फार्म से लेकर शहर के रिटेल स्टोर तक। एआई आधारित सेंसर और रीयल-टाइम टेस्टिंग किट्स मिलावट का तुरंत पता लगा सकती हैं। मोबाइल ऐप्स के माध्यम से उपभोक्ता शिकायतें दर्ज कर सकते हैं और लैब रिपोर्ट्स सार्वजनिक डोमेन में अति शीघ्रता से पारदर्शी रूप से उपलब्ध कराई जा सकती हैं।

साथियों बात अगर हम त्योहारी सटीक सतर्कताः को समझने की करें तो एफएसएसएआई का मिलावट विरोधी अभियान- 2026, त्योहारों से पूर्व एफएसएसएआई ने राज्यों को मिलावट विरोधी अभियान- 2026 के तहत निरीक्षण और सैंपलिंग बढ़ाने के निर्देश दिए हैं। विशेष रूप से मिठाइयां, नमकीन, खाद्य तेल, घी, खोआ और पनीर जैसे उत्पादों पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है। चिन्हित हॉटस्पॉट और संवेदनशील क्षेत्रों में छापेमारी और त्वरित कार्रवाई की सटीक रणनीति तत्परता से अपनाई जा रही है।

साथियों बात अगर हम पूरी दुनियाँ के उपभोक्ताओं क़ो जागरूक होना अत्यंत जरूरी है, इसको समझने की करें तोसख्त कानून और प्रशासनिक कार्रवाई के साथ- साथ उपभोक्ता जागरूकता भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। पैकेजिंग पर एफएसएसएआई लाइसेंस नंबर की जांच, एक्सपायरी डेट देखना, और संदिग्ध स्वाद या गंध की स्थिति में शिकायत दर्ज कराना, ये छोटे कदम बड़े परिणाम दे सकते हैं। उपभोक्ता फोरम, राज्य खाद्य सुरक्षा अधिकारी औरएफएसएसएआई हेल्पलाइन शिकायत दर्ज करने के प्रमुख माध्यम हैं।

साथियों बात अगर हम इस पूरे मुद्दे को अंतरराष्ट्रीयसंदर्भ और भारत की प्रतिष्ठा से जोड़कर समझने की करें तो भारत की वैश्विक दुग्ध उत्पादन में अग्रणी स्थिति उसकी कृषि और सहकारी संरचना, विशेषकर अमूल मॉडल की सफलता का परिणाम है। परंतु यदि गुणवत्ता संकट गहराता है तो अंतरराष्ट्रीय व्यापार और निर्यात संभावनाओं पर भी प्रभाव पड़ सकता है। वैश्विक मानकों के अनुरूप गुणवत्ता सुनिश्चित करना भारत की प्रतिष्ठा और आर्थिक हित दोनों के लिए अनिवार्य है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विशेष कारण चरण करें तो हम पाएंगे क़ि मात्रा से गुणवत्ता की ओर निर्णायक कदम, डिजिटल युग में जहां सूचना तुरंत फैलती है, वहां खाद्य मिलावट जैसे मुद्दे सरकार, उद्योग और समाज सभी के लिए चुनौती बन जाते हैं। भारत ने उत्पादन में विश्व नेतृत्व हासिल कर लिया है, परंतु अब समय है कि गुणवत्ता नियंत्रण, प्रवर्तन सख्ती और तकनीकी नवाचार के माध्यम से विश्वास की पुनर्स्थापना की जाए। दूध केवल एक उत्पाद नहीं, बल्कि करोड़ों परिवारों के पोषण, किसानों की आय और राष्ट्र की स्वास्थ्य सुरक्षा से जुड़ा आधार है। यदि मिलावट पर प्रभावी अंकुश लगाया गया, तो भारत न केवल उत्पादन में बल्कि गुणवत्ता और सुरक्षा में भी विश्व नेतृत्व स्थापित कर सकता है।

-संकलनकर्ता लेखक - क़र विशेषज्ञ स्तंभकार साहित्यकार अंतरराष्ट्रीय लेखक चिंतक कवि संगीत माध्यमा सीए(एटीसी) एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com

(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। **RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023**